Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

भविष्य में होने वाले दुःख को दृष्टि से ओझल कर वर्तमान सुख को खोजने वाले मनुष्य आयुष्य और यौवन के क्षीण होने पर परिताप करते हैं।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 32 • 13 मई - 19 मई , 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 11-05-2024 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

आचार्य महाश्रमण का आचार्य पदाभिषेक

सरदारशहर की पुण्य धरा पर, अद्वितीय इक फूल खिला, उसी धरा में शिक्षा, दीक्षा, उसी धरा में ताज मिला।

युगप्रधान पदाभिषेक वहां पर, वैशाख माह का भाग्य फला, वीतराग पथ पर बढ़ता जाए, महाश्रमण का काफिला।।

श्रद्धाप्रणत: अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

आचार्यश्री तुलसी ने दिया था 'महाप्रज्ञ' का सार्थक अलंकरण: आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य महाप्रज्ञ जी के 15वें महाप्रयाण दिवस पर उनके अनंतर पट्टधर ने दी उनके जीवन, साहित्य एवं व्यवहार से शिक्षण लेने की प्रेरणा

आडूल।
4 मई, 2024

तेरापंथ धर्मसंघ के दशम् अधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के सक्षम पट्टधर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में अनेक प्रकार के मनुष्य पैदा होते हैं। किसी जगह, किसी गांव में ऐसे बच्चे पैदा होते हैं, जो आगे जाकर महान व्यक्ति के रूप में उभर जाते हैं। छोटे बच्चे में महान व्यक्ति के बीज मूल में हो सकते हैं जो भविष्य में उभर कर आ सकते हैं।

आज आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 15वां महाप्रयाण दिवस है। वैशाख कृष्णा एकादशी को सरदारशहर में उन्होंने अंतिम श्वास लिया था। महाप्रज्ञ शब्द एक शास्त्रीय शब्द है। आचार्य श्री तुलसी ने अपने सुशिष्य मुनिश्री नथमलजी स्वामी 'टमकोर' को महाप्रज्ञ अलंकरण देकर इस शास्त्रीय शब्द का उपयोग किया था। यह गंगाशहर का प्रसंग है, आचार्य श्री तुलसी ने उस समय संभवतः यह गीत भी गाया था- स्वामीजी थांरी साधना री मेरू सी ऊंचाई। कुछ ही समय के बाद राजलदेसर मर्यादा महोत्सव विक्रम संवत 2035 में आचार्य श्री तुलसी द्वारा 'महाप्रज्ञ' अलंकरण को महाप्रज्ञ नामकरण में परिवर्तित कर युवाचार्य महाप्रज्ञ कर दिया गया था।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की दीक्षा सरदारशहर में पूज्य कालूगणी के कर कमलों से हुई थी। सरदारशहर में उनका संसारपक्षीय ननिहाल था, दीक्षा भी हुई थी, न्यारा का एक चातुर्मास भी सरदारशहर में हुआ था, और महाप्रयाण भी सरदारशहर में हो गया था। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अपने पूरे जीवन काल में केवल दो ही चातुर्मास न्यारा में किए थे, एक सरदारशहर और दूसरा दिल्ली।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का जन्म खुले आकाश में हुआ था। छोटे बच्चे के अन्दर संस्कार, कर्म का क्षयोपशम हो सकता है, जिसके आधार पर व्यक्तित्व और कर्तृत्व का निर्माण भी हो सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ जी ने पूज्य कालुगणी का कृपा प्रसाद भी प्राप्त किया, मुनि तुलसी से जुड़े रहे। बाद में आचार्य तुलसी की सन्निधि में रहे और उनकी विकास की यात्रा आगे चली। संस्कृत भाषा और हिन्दी भाषा का वैदुष्य भी प्राप्त किया, उनकी भाषा शुद्ध और स्पष्ट थी। वे एक विद्वान वक्ता, एक दार्शनिक संत के रूप में सामने आए। उन दिनों में मुनि नथमल जी, मुनि बुद्धमल जी, मुनि नगराज जी(संघ मुक्त) ये तीन संत विद्वान संतों के नाम से प्रसिद्ध थे।

उनकी बुद्धि प्रखर थी। आचार्य तुलसी ने जो महाप्रज्ञ अलंकरण दिया था, वह सार्थक अलंकरण था।

(शेष पेज 2 पर)

विनय से करें अहंकार के नाश का प्रयास: आचार्यश्री महाश्रमण

चित्तेपिंपल गांव।
5 मई, 2024

आदमी के भीतर अनेक वृतियां होती है। साधारण आदमी में जहां गुस्से की वृत्ति होती है, तो अहंकार की संज्ञा, माया के संस्कार और लोभ की चेतना भी होती है। ये चार कषाय हमारी वृत्तियां होती हैं। राग और द्वेष में ये चारों कषाय समाविष्ट हो जाते हैं। ये विचार आचार्य श्री महाश्रमणजी ने उपस्थित जनसमूह को पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाए।

शास्त्र में कहा गया है कि उपाय के द्वारा कोई विनय की प्रेरणा दे तो अहंकार में न आये। जो हमारा हितैषी है, उसकी बात सुनें। कितना ग्रहण करना ये अलग बात है। घमंड कई बार आदमी के भीतर नाग की तरह फुफकारता है।

अहंकार कई चीजों का हो सकता है। जो ज्ञान का अहंकार करता है, वह हाथी की तरह मदान्त हो जाता है, पर जब वह दूसरे के ज्ञान को देखता है तब वह पश्चाताप करता है। अगर नया ज्ञान किसी से मिले तो उसे शालीनता से स्वीकार करें। ज्ञान का अहंकार नहीं करना चाहिए। धन और रूप आदि का अहंकार भी नहीं करना चाहिए, ये सब पुद्गल हैं, इनमें परिवर्तन होता रहता है।

बड़ी तपस्या करने वाले भी अहंकार न करें। अक्षय तृतीया का कार्यक्रम भी सामने है, निष्काम तपस्या चले। सत्ता का घमंड नहीं करना चाहिये। सत्ता सेवा के लिए मिलती है, सत्ता का बढ़िया उपयोग करें तो अधिकार उपहार है, वरना भार है। अधिकार उपकार मांगता है, वरना वह धिक्कार है।

अभिमान तो मदिरा पान की तरह है। हर किसी को ऊंचा पद भी नहीं मिलता है, पद के अनुरूप कद भी होना चाहिए। हम विनय से अहंकार का नाश करने का प्रयास करें।

दो वर्षों पश्चात गुरुदर्शन कर रहे मुनि पुलकित कुमार जी एवं मुनि आदित्यकुमार जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। महाराष्ट्र विधान सभा के पूर्व सभा पति नाना हरिभाऊ बागड़े ने पूज्य प्रवर के स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए। औरंगाबाद महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

आचार्यश्री तुलसी ने...

आचार्य महाप्रज्ञ जी में वैदुष्य था, संस्कृत, प्राकृत का ज्ञान था, आचार्य भिक्षु के साहित्य का उन्होंने गहराई से अध्ययन किया था। उसकी निष्पत्ति थी 'भिक्षु विचार दर्शन' पुस्तक। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की एक और किताब है - 'जैन दर्शन मनन और मीमांसा' जिसका विद्वदजनों में विशेष स्थान है। पूज्य प्रवर ने चारित्रात्माओं को इस पुस्तक के स्वाध्याय की प्रेरणा दी। आचार्य प्रवर ने आगे फरमाया कि एक महत्वपूर्ण उनका सेवा का कार्य है- आगम संपादन का। उनके श्रुतलेखन कार्य का मुझे भी सौभाग्य मिला था। आगम संपादन में उन्होंने अत्यधिक श्रम किया था।

हमारे धर्म संघ में गुरुदेव तुलसी की वाचना प्रमुखता में आगम संपादन का कार्य शुरू हुआ था। गुरुदेव तुलसी का अपना पांडित्य था। उनका लंबा आचार्यकाल था, उन्होंने लंबी-लंबी यात्राएं भी की थी। कुछ अंशों में गुरुदेव तुलसी राजा थे तो मुनि नथमल जी उनके महामंत्री थे।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की अनुपस्थिति में रहने का 14 वर्ष का काल लगभग संपन्न हो रहा है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के पास रहने का मुझे तो विशेष मौका मिला। वे नियमित योग साधना-ध्यान साधना करते थे। उनकी जीवन शैली काफी व्यवस्थित थी। शरीर की काफी अनुकूलता थी, यह एक प्रकार की पुण्यवत्ता थी। ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम भी अनुकूल था, कषायमंदता - शांत मुद्रा थी, आयुष्य भी लंबा, नाम, गोत्र कर्म देखें तो जैन-जैनेतर समाज में भी उनका नाम था। गुरु के सामने वे आचार्य पद पर स्थापित हो गये थे। गुरुदेव तुलसी ने कहा था- तुलसी में महाप्रज्ञ को देखो, महाप्रज्ञ में तुलसी को देखो। दोनों में अद्वैत था। मुख्य मुनि महावीर कुमार जी को भी आज के ही दिन एक वर्ष पूर्व बहुश्रुत परिषद् के संयोजक पद पर स्थापित किया गया था। आचार्य प्रवर ने पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की स्मृति में 'तेरापथ का राजा' गीत का सुमधुर संगान करवाया। पूज्य प्रवर ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन से, साहित्य से, व्यवहार से शिक्षण लेने की प्रेरणा प्रदान की।

मुख्य प्रवचन से पूर्व साध्वीवृंद ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की अभिवंदना में गीत की प्रस्तुति दी। 'क्षेमंकर' मुनि सिद्धकुमार जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। आचार्य प्रवर के स्वागत में दिगंबर समाज से ब्रह्मचारिणी बहन एवं संजय कासलीवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सक्षमता में भी क्षमा धारण कर लेना है बड़ी बात: आचार्यश्री महाश्रमण

मुर्मा।
2 मई, 2024

वीतराग पथ दर्शक आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आर्हत् वांग्मय के माध्यम से प्रेरणा देते हुए फरमाया कि दस धर्मों में पहला धर्म है क्षमा। जो भी क्षमा धारण करता है उसका हित निश्चित होता है।

जैन शासन में पर्युषण, संवत्सरी, दस लक्षण आदि पर्व आते हैं। भगवती संवत्सरी महापर्व क्षमा से जुड़ा हुआ है। क्षमा देना और क्षमा मांगना, सब प्राणियों के प्रति मैत्री भाव होना बहुत अच्छी साधना होती है।

मन में आक्रोश है उसको भी पी जाओ। जो हमारा बुरा कर दे, नुकसान कर दे उसको भी क्षमा कर देना बहुत ऊंची बात है। आदमी की कमजोरी हो सकती है वह गुस्से में आ जाता है, पर धन्य हैं वे लोग जो जिनके मन में कोई गुस्सा नहीं, प्रतिशोध की भावना नहीं है। शत्रु के साथ भी मित्रता पूर्ण व्यवहार करना उदारता है।

शक्ति होने पर भी क्षमा रखना बड़प्पन है। क्षमा वीरों का भूषण है। भगवान महावीर ने कितने उपसर्ग सहे, वे तो क्षमा के आदर्श पुरुष हैं। आचार्य भिक्षु के सामने भी कठिनाइयां आई, आचार्य श्री तुलसी के जीवन में प्रतिकूलता आई थीं।

क्षमा महान धर्म है, विवशता में नहीं बोलना कोई बड़ी बात नहीं है, सक्षमता में भी क्षमा धारण कर लेना बड़ी बात है। शांति रखने का प्रयास करें, दूसरे की बराबरी करने का प्रयास नहीं करें। बराबरी, अनुकरण करो तो अच्छे काम का करो। क्षमा धर्म हमारे जीवन में पुष्ट रहे। पूज्य प्रवर के स्वागत में पारस ओस्तवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। जालना ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों आचार्य श्री के दीक्षा कल्याण वर्ष के उपलक्ष में अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

उत्कर्ष का पहला सूत्र है- सम्यक् सोच

पूर्वांचल कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद पूर्वांचल कोलकाता द्वारा युवा उत्कर्ष कार्यशाला का आयोजन न्यू टाऊन स्थित तीर्थंकर कॉपरेटिव हाउसिंग सोसायटी में आयोजित हुआ।

इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा जिन्दगी का सबसे महत्वपूर्ण व स्वर्णिम समय है- जवानी, जिसमें युवा पीढ़ी अपने व्यक्तित्व व कर्तृत्व के द्वारा अपने आपको तेजस्वी, मनस्वी, शक्ति संपन्न बना सकती है। युवा समाज का कर्णधार है, युवा वह है जिसमें चिन्तन, सृजन शीलता धैर्य, समय एवं श्रम नियोजन की क्षमता है। मुनिश्री ने आगे कहा- प्रत्येक व्यक्ति उत्कर्ष चाहता है। विकास या उत्कर्ष का पहला सूत्र है- सम्यक् सोच। सम्यक् सोच में सत्यं-शिवं-सुन्दरं का संगीत छिपा है, सम्यक् सोच सद्गति की ओर ले जाती है। सम्यक् सोच से सद्भावना आदि का विकास होता है। मधुर व्यवहार, मधुर वाणी, उदार दिल, समय व वचन की पाबंदी व आत्म निरीक्षण व्यक्ति को ऊंचाई की ओर ले जाता है। इस अवसर पर मुनि परमानंदजी ने कहा- जिस व्यक्ति के भीतर उत्कर्ष के प्रति जिज्ञासा एवं समर्पण होता है वही उत्कर्ष को प्राप्त कर सकता है। मुनि कुणालकुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। ज्ञानाशाला ज्ञानार्थियों को प्रमाणपत्र एवं वर्षीतप तपस्वी सरोज देवी संचेती का साल्टलेक सभा द्वारा सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन पूर्वांचल तेरापंथ युवक परिषद मंत्री सिद्धार्थ दुधेड़िया ने किया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

सम्यक् सोच में सत्यं-शिवं-सुन्दरं का संगीत छिपा है, सम्यक् सोच सद्गति की ओर ले जाती है।

बच्चों के संस्कार निर्माण में मां की भूमिका है अहम

बालोतरा।

तेरापंथ महिला मंडल बालोतरा द्वारा साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में पौध को सींचे कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत के पश्चात महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

साध्वी मनोज्ञयशा जी ने कार्यशाला का प्रारंभ महाप्राण ध्वनि से करवाया और कहा कि प्रेक्षाध्यान के द्वारा हम अपने दिमाग को स्थिर रख सकते हैं और अपनी जागरूकता बढ़ा सकते हैं।

इस अवसर पर साध्वी रतिप्रभा जी ने विशेष प्रेरणा देते हुए कहा कि बच्चों के संस्कार निर्माण में अहम भूमिका मां की होती है। मां के गर्भ में जब बच्चा आता है तभी से उसे अच्छे संस्कार देने चाहिए और अपनी सोच को पॉजिटिव रखना चाहिए। मां को अपने बच्चों के साथ समय बिताना चाहिए। कार्यशाला की मुख्य वक्ता बाल विशेषज्ञ वनीता श्रीमाल ने कहा कि बच्चों पर अधिक दबाव नहीं देना चाहिए। हर बच्चे का पढ़ने का अपना मन होता है, अपनी क्षमता होती है, इसलिए दूसरे बच्चों से तुलना करना ठीक नहीं है। मंडल द्वारा मुख्य वक्ता वनीता श्रीमाल को सम्मानित किया गया।

महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री रेखा बालड़ ने किया और आभार ज्ञापन प्रचार-प्रसार मंत्री समता भंसाली ने किया।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में करियर काउंसलिंग

संभाजीनगर, औरंगाबाद।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में करियर काउंसलिंग कार्यशाला तेरापंथ भवन, पानदरीबा रोड में आयोजित की गयी। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से अर्हम धोका और मेधांश नाहर ने की। मुख्य वक्ता सुरेश कटारे का स्वागत टीपीएफ के अध्यक्ष डॉ. आनंद नाहर ने किया।

सुरेश कटारे ने बहुत ही सुंदर एवं सरल भाषा में बच्चों को करियर के विविध विकल्पों की जानकारी दी। साथ ही बच्चों के करियर में अभिभावकों की भूमिका के बारे में अच्छे सुझाव दिए। इस कार्यक्रम में तेयुप मंत्री मयूर आच्छा, अणुव्रत समिति मंत्री सुनीता सेठिया के साथ अच्छी संख्या में अभिभावक और बच्चे उपस्थित थे।

कार्यक्रम के आयोजन में टीपीएफ के जॉइंट सेक्रेटरी डॉ. हर्षल कोठारी, जॉइंट सेक्रेटरी चेतन सुराणा, सदस्य सचिन जैन, तेरापंथ किशोर मंडल और तेरापंथ कन्या मंडल का भी इस कार्यक्रम के आयोजन में बहुत सहयोग मिला।

कार्यक्रम का सुंदर संचालन टीपीएफ के जॉइंट सेक्रेटरी अंकिता बोथरा ने किया। आभार ज्ञापन डॉ. रुपाली नाहर ने किया।

चुनाव शुद्धि अभियान

अहमदाबाद। अणुव्रत विश्व भारती के निर्देशानुसार चुनाव शुद्धि अभियान के अन्तर्गत 'हमारा देश, हमारा भविष्य : सही चयन हमारा दायित्व' पर अहमदाबाद क्षेत्र के मेयर प्रतिभा जैन, दर्शनाबेन वाघेला, म्युंसिपल कॉरपोरेटर लालभाई, अमित कोठारी, अहमदाबाद पूर्व क्षेत्र के उम्मीदवार दिनेश मकवाना आदि को चुनाव शुद्धि अभियान की जानकारी दी गई। बैनर और चुनाव साहित्य भेंट किया गया।

उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण एवं चरित्र निर्माण में अणुव्रत सराहनीय कार्य कर रहा है। लोगों को वोट देने की अपील की गई।

कन्या सुरक्षा सर्कल एवम् गंगा जमुना सोसाइटी में भी चुनाव शुद्धि अभियान की जानकारी दी गई।

संक्षिप्त खबर

ग्रीष्मकालीन शिविर व वार्षिकोत्सव का आयोजन

मध्य उत्तर कोलकाता। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (मध्य-उत्तर) कोलकाता क्षेत्र की ज्ञानशाला के तत्वावधान में अरिहंत आवास में वार्षिकोत्सव व ग्रीष्म शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। मनीषा नाहटा ने बच्चों को योग व ध्यान के प्रयोग, कीर्ति कोठारी, रोशनी कोठारी, संगीता बैद एवं सुनीता संचेती ने विभिन्न गतिविधियां करवाई। छोटे बच्चों को वर्णमाला व बड़े बच्चों को 25 बोल पर आधारित गेम खिलाया गया। सबका उत्साहवर्धन करते हुए बंगाल स्तरीय आंचलिक संयोजिका डॉ. प्रेमलता बाई चोरड़िया, सहसंयोजक संजय पारख, मालचंद भंसाली, मंजू बाई घोड़ावत आदि ने बच्चों को परीक्षा प्रमाण पत्र एवं उपहार वितरित किये।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा इस सत्र के छठे रक्तदान शिविर का आयोजन किया। जिसमें कुल 56 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। शिविर की आयोजना में यूएनआई वर्ल्ड क्लब, ममता शारडा, पदाधिकारी गण का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इसी तरह सातवें रक्तदान शिविर का आयोजन नेचुरल सिटी श्याम नगर में किया गया, जिसमें कुल 62 यूनिट रक्तदान वहां के निवासियों द्वारा किया गया। एमबीडीडी संयोजक पारस नाहटा, कार्यसमिति सदस्य हेमंत बैद, प्रभात चिंडालिया व किशोर मण्ड़ल से हर्ष सिंघी ने अपनी सेवाएं दी।

स्वयं की असली पहचान को जानें

श्रवणबेलगोला। श्रवणबेलगोला के कर्नाटक भवन में साध्वी संयमलता जी ने श्रावक-श्राविकाओं को उद्बोधन देते हुए कहा- मनुष्य यह जानता की वह कौन है, वह एक पिता, एक पुत्र, एक व्यापारी है। मनुष्य स्वयं की नई पहचान बनता रहता है, इसके परिणाम स्वरुप वह अपने सच्चे स्वरूप से दूर हो जाता है। जीवन में सारे दुःख अपनी असली पहचान न जानने के कारण हैं। जब तक आप अपने सच्चे स्वरूप का अनुभव नहीं करते, तब तक आप खुद को उस नाम से मानते हैं जो आपको दिया गया है। वास्तविकता में हम एक शाश्वत आत्मा है। अनंत जन्मों से आत्मा अज्ञानता के आवरण में है। इसके कारण हम स्वयं का अनुभव करने में असमर्थ रहते हैं। साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि आध्यात्मिक जगत में स्वयं को जानकर ही व्यक्ति भौतिक जगत में सफलता को प्राप्त कर सकता है। साध्वी मनीषाप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किये। साध्वी रौनकप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम में मण्डिया की विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी एवं श्रावक-श्राविका समाज उपस्थित थे।

स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

रायपुर। तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर व डेन्टल केयर, रायपुर के माध्यम से भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर विभिन्न प्रकार की जांच रियायती दरों पर की गयी। कुल 128 प्रकार की जांच का लाभ 95 व्यक्तियों द्वारा लिया गया।

❖ आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।

-आचार्य श्री महाश्रमण

दायित्व है कर्तृत्व का विस्तार

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

विश्व क्षितिज पर ऐसे अनेक व्यक्तित्व उभर कर आए हैं, जिन्होंने अपने भीतर व बाहर के बीच तादात्म्य का तार साधा है। इस तादात्म्य से उनका अस्तित्व एक काया में सिमट कर नहीं रह जाता, विस्तृत हो जाता है। व्यक्ति के कर्तृत्व की गूंज समष्टि में प्रतिध्वनित होने लगती है। अनेक ऐसे व्यक्तित्व हैं जो अस्तित्व विस्तार से संपर्क साध चुके हैं। आत्म-जागरण की दिशा में समर्पित उनका अस्तित्व प्राणीमात्र को आत्मोत्थान का दर्शन दे रहा है। उनमें एक नाम है आचार्य महाश्रमणजी का।

जिसका कर्तृत्व व्यापक होता है उसे ही व्यापक का दायित्व प्रदान किया जाता है। दायित्व के सम्यक् बोध एवं निर्वहन में कर्तृत्व की महनीय भूमिका रहती है। किसी भी व्यक्ति को दायित्व सौंपे जाने से पूर्व उसकी अर्हताओं पर विश्वास होना आवश्यक है। आचार्य महाप्रज्ञजी को विश्वास था कि मुनि मुदित तेरापंथ की बागडोर संभालने में सक्षम हैं। इनमें अध्यात्मनिष्ठा, आचारनिष्ठा और कर्तव्यनिष्ठा है। इस विश्वास की परिणति थी कि आचार्य महाप्रज्ञ ने दायित्व की चादर महाश्रमण मुनि मुदित को सौंपी और युवाचार्य महाश्रमण के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने आचार्य महाश्रमणजी की कर्तृत्वशक्ति का मूल्यांकन किया। धीरे-धीरे उनके दायित्वों का क्षितिज विस्तृत होता चला गया। योग्य शिष्य से गरिमामय आचार्यपद तक की यात्रा में उनका कर्तृत्व उत्तरोत्तर निखरता गया। कर्तृत्व को निखारने वाला घटक तत्त्व है व्यक्ति की अपनी गुणात्मकता। आचार्य महाश्रमणजी का जीवन अनेक विशिष्ट गुणों का समवाय है। संयमनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा, नियमनिष्ठा, न्यायनिष्ठा, श्रमनिष्ठा और सेवानिष्ठा के साथ-साथ विनम्रता, प्रसन्नता, सहिष्णुता आदि ऐसे गुण हैं जो आपके व्यक्तित्व में चार चांद लगाने वाले हैं। यही वजह है कि आचार्यवर दायित्व का पूरी जागरूकता के साथ निर्वहन कर रहे हैं।

दायित्व का अनुभव करने वाला व्यक्ति आज्ञानिष्ठ होता है। जो व्यक्ति आज्ञा के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित है, वह निर्वाण को प्राप्त करता है। व्याख्या साहित्य में एक श्लोक उल्लिखित है-

गुरु आणाए मुक्खो गुरुप्पसाओ उ अट्ठसिद्धिओ।
गुरुभत्तीए विज्जासाफल्लं होइ निव्वाणं॥

गुरु आज्ञा में रहने वाला शिष्य दुःख से मुक्त हो सकता है, गुरु के अनुग्रह से अष्ट सिद्धियां हस्तगत कर सकता है, गुरु भक्ति से ज्ञान में सफलता प्राप्त कर सकता है और निर्वाण को भी प्राप्त कर सकता है। निर्वाण की अदम्य अभीप्सा रखने वाले आचार्य महाश्रमणजी अपनी साधना के प्रति भी पूर्ण समर्पित हैं। पदयात्रा में भी उनकी साधना का क्रम अनवरत चलता रहता है। नित्यक्रम जब तक पूरा नहीं होता, प्रातराश नहीं करते हैं। यह क्रम मुनि अवस्था में और युवाचार्य अवस्था में भी अनवरत चलता रहा है। कभी-कभी लम्बे विहारों के कारण, श्रावकों के घरों का स्पर्श करने में अथवा अन्य कोई विशेष कार्य सामने आ जाने पर साधना में व्यवधान भी आते हैं, पर आचार्य महाश्रमणजी का संकल्प फौलादी हैं, वे जो सोचते हैं, उसे क्रियान्वित भी करते हैं, सिर्फ गुरु का निर्देश ही इसमें अपवाद रहता है। एक प्रसंग लुधियाना का है।

परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी पंजाब में विहरण करते हुए लुधियाना पधारे। नित्यक्रम के अनुसार गंतव्य स्थल पर पहुंचने के बाद प्रातराश किया, कुछ क्षणों के लिए विश्राम किया, फिर मुझे (साध्वी विश्रुतविभा) पूछा- 'महाश्रमण आज पंडाल में नहीं गए?' मैंने कहा- 'नहीं,अभी तक तो नहीं पधारे।' आचार्यश्री ने फरमाया 'आज देरी कैसे हुई?' आचार्यवर ने समणीजी को संकेत करते हुए कहा- 'देखो, महाश्रमण क्या कर रहे हैं?' अतिशीघ्र समणीजी ने युवाचार्यश्री के कक्ष में प्रवेश किया और देखा- 'युवाचार्यश्री ध्यान कर रहे हैं और थोड़ी दूरी पर नाश्ते के लिए टेबल पर पात्रियां रखी हुई है। मुनि कुमारश्रमण जी सेवा में आसीन है।' समणीजी ने सारा वृत्तान्त बताया। आचार्यश्री ने मुनि कुमारश्रमण जी को आहूत किया। वे तत्काल आचार्यवर के कक्ष में पहुंचे।

आचार्यश्री-'अभी महाश्रमण क्या कर रहे हैं?' मुनि कुमारश्रमणजी- 'युवाचार्यश्री अभी जप करवा रहे हैं।' आचार्यश्री- 'आज व्याख्यान में मैं चला जाऊं?' मुनि कुमारश्रमणजी- 'नहीं, आचार्यवर नहीं पधारें। मैं युवाचार्यश्री को निवेदन कर देता हूं। आचार्यप्रवर फरमाएंगे तो नाश्ता करके व्याख्यान में पधार जाएंगे, अन्यथा नाश्ता यों ही पड़ा रहेगा!' आचार्यश्री 'ठीक है। महाश्रमण को कह दो-पहले नाश्ता करें, उसके बाद व्याख्यान में जाए।' मुनि कुमारश्रमण जी ने आचार्यवर ने जो फरमाया, हुबहू निवेदन कर दिया। युवाचार्यश्री ने बिना किसी तर्क-वितर्क के प्रातराश किया और बाद में व्याख्यान में पधारे। इसे आज्ञानिष्ठा का अनुपम उदाहरण कहा जा सकता है। जहां गुरु की आज्ञा है, वहां अन्य सारे कार्य गौण हो जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि कालिदास का यह सूक्त 'आज्ञा गुरुणां ह्यविचारणीया' आचार्य महाश्रमणजी के जीवन में अक्षरशः घटित हो रहा है। एक बार स्वयं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने व्याख्यान में युवाचार्य महाश्रमणजी की आज्ञानिष्ठा का उल्लेख करते हुए फरमाया- 'हमसे कोई प्रश्न पूछे कि संघ में सबसे अधिक आज्ञाकारी कौन? तो मैं कहूंगा- युवाचार्य महाश्रमण। युवाचार्य के पद पर हैं, फिर भी कोई कार्य मेरी आज्ञा के बिना, मेरी दृष्टि के बिना नहीं करते।'

वर्तमान में भी आचार्यप्रवर अपनी साधना के प्रति पूर्णरूपेण जागरुक हैं। 18 अप्रैल 2024 का प्रसंग है। आचार्यप्रवर ने विहार के मध्य दो स्थानों पर आसीन होकर जप आदि का क्रम सम्पन्न किया। उनमें से पहला एक वृक्ष के आसपास खुला स्थान था तो दूसरा साकखेड़ में 'संत बाबूदेव महाराज मंदिर' का स्थान। आचार्यप्रवर ने जप आदि का नियमित क्रम सम्पन्न करने के पश्चात् ही उदक ग्रहण किया। इस अनुष्ठान के कारण गंतव्य स्थल पहुंचने में विलम्ब भी हो गया, पर अपने दैनन्दिन साधना के क्रम को गौण नहीं किया।

दायित्व उस व्यक्ति को सौंपा जाता है जो श्रमनिष्ठ होता है। निःसंदेह श्रमशील व्यक्ति अपने कार्यों में सफल होता है। वह पुरुषार्थ के द्वारा अपनी मंजिल को प्राप्त करता है। आचार्य महाश्रमणजी बचपन से ही पुरुषार्थी थे। उन्होंने हमेशा अपनी शक्ति का सही दिशा में उपयोग किया। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी के हृदय में उनका विशेष स्थान था। अनेक विशेषताओं के पुञ्ज मुनि मुदितकुमारजी को आचार्यश्री तुलसी ने 'महाश्रमण' पद से अलंकृत किया। आचार्य महाप्रज्ञजी ने उदयपुर चातुर्मास में कहा था-'महाश्रमण धर्मसंघ के युवाचार्य हैं। तेरापंथ का युवाचार्य होना बड़े भाग्य की बात है। महाश्रमण युवाचार्य होने के साथ-साथ महाश्रमिक भी हैं।' आचार्य महाप्रज्ञजी के मुखारविन्द से निःसृत ये शब्द युवाचार्य महाश्रमणजी की पुरुषार्थ की गाथा को अभिव्यंजित करने वाले हैं।

एक बार परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी बवानीखेड़ा (पंजाब) में प्रवास कर रहे थे। युवाचार्यश्री महाश्रमणजी व्याख्यान के पश्चात् अपने स्थान पर पधार रहे थे। साथ में मुमुक्षु बहिनें उच्च स्वर से गीत का संगान कर रही थी। उनकी मधुर ध्वनि को सुनकर आचार्य महाप्रज्ञ जी ने विनोद के लहजे में संतों को कहा-देखो, महाश्रमण बड़े ठाठबाट से आ रहे हैं। इतने में ही युवाचार्यप्रवर आचार्यवर के कक्ष में पधार गए। आचार्यवर ने युवाचार्यश्री को कहा-ऐसा लग रहा है मानो विहार करके आए हो। युवाचार्यवर आचार्यश्री के शब्दों का श्रवण कर मुस्कुराने लगे। आचार्यवर ने संतों की ओर दृष्टिपात करते हुए फरमाया- 'जो श्रम करते हैं, उनका वर्धापन होता है। हमारा सूत्र है- श्रम करो सफल बनो।'

आचार्य महाश्रमणजी का जीवन पराक्रम की कहानी है। साधु-साध्वियों की सारणा-वारणा करना, प्रवचन करना, क्षेत्रों की सार-संभाल करना, जनता को प्रतिबोध देना, लोगों को दर्शन देना, उनकी समस्याओं का समाधान करना, ज्ञानामृत का वितरण करना, घरों का स्पर्श करना आदि विविध कार्यों में आचार्यवर अपने पुरुषार्थ का प्रस्फोटन कर रहे हैं। सफलता श्रम पर समर्पित होती है। अहिंसा यात्रा में हमने अनेक बार अनुभव किया कि परमपूज्य आचार्यवर के दरबार में कोई व्यक्ति अपनी भावना लेकर पहुंचे और वह खाली हाथ लौट जाए, संभव नहीं। लम्बा घुमाव लेकर और मौसम की प्रतिकूलता को सहन करके भी आचार्यप्रवर जब श्रावक-श्राविकाओं की भावना को पूरा करते हैं तो उन्हें अत्यधिक प्रसन्नता की अनुभूति होती है। आचार्यप्रवर संघर्ष से कभी डरे नहीं। जिन्होंने आपके संघर्ष को देखा है, वे ही आपकी सफलता की सही कीमत आंक सकते हैं।

अहिंसा यात्रा के दौरान आचार्यवर मेवाड़ की पथरीली भूमि पर यात्रायित थे। उस दिन का गंतव्य स्थल फरारा गांव कानादेव का गुड़ा से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। करुणा सागर आचार्यवर ने फरारा स्थित प्रवास तक पहुंचने से पूर्व दस कि.मी. का अतिरिक्त विहार किया। इसका कारण था फरारा से पांच कि.मी. की दूरी पर बसे हुए पीपराडा के श्रावकों की उत्कृष्ट भावना। महातपस्वी आचार्य महाश्रमणजी ने विहार की लम्बाई को गौण कर भक्ति से आपूरित श्रद्धालुओं की भावनाओं को पूरा किया। मात्र एक तेरापंथी परिवार को तृप्त करने हेतु आप पीपराडा पधारे। यह है आचार्य महाश्रमणजी की श्रमनिष्ठा का और संघनिष्ठा का उदाहरण। एक-एक परिवार को संभालने के लिए कहां से कहां पहुंच जाते हैं। इससे धर्मसंघ की नीवें गहरी होती हैं। पुरष्करावर्त मेघ की भांति जहां भी पधारते हैं, हजार वर्ष के लिए वह भूमि स्निग्ध हो जाती है। उस क्षेत्र के श्रावक श्रद्धा से आप्लावित होकर सदा-सदा के लिए संघभक्त बन जाते हैं। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी आचार्य महाश्रमणजी अनेक प्रकार के कार्यों में संलग्न रहकर भी कभी क्लान्ति का अनुभव नहीं करते। उनके चेहरे पर हमेशा प्रसन्नता का ही दर्शन होता है।

जो शिष्य जागरूक होता है वह गुरुओं द्वारा प्रदत्त प्रत्येक दायित्व का निष्ठा से निर्वहन करता है। प्राकृत साहित्य में एक सूक्त आता है- 'सीसस्स हुंति सीसा न हुंति सीसा असीसस्स'- 'शिष्य के शिष्य होते हैं, अशिष्य के शिष्य नहीं होते।' जो अच्छा शिष्य होता है, वही अच्छा गुरु बन सकता है। आचार्य महाश्रमणजी ने एक अच्छे शिष्य की भूमिका का निर्वहन किया है। इसीलिए आप एक श्रेष्ठ गुरू के रूप में सुशोभित हो रहे हैं। वह शिष्य धन्य होता है जो गुरु के कार्यों को अंजाम देता है, गुरु के हृदय में अपना स्थान बनाने में सफल होता है। आचार्य महाश्रमणजी हमेशा गुरुओं द्वारा निर्दिष्ट कार्यों को पूरा करने के लिए जागरूक रहे हैं। इस अप्रमत्तता ने उनको विकास के उच्च सोपानों पर आरूढ़ किया है।

दायित्व का अनुभव करने वाला शिष्य किसी भी संघर्ष के समय जनता के आक्रोश को स्वयं सहन करता है, अपने गुरु को उससे दूर रखने का यत्न करता है। प्रसंग 2006, भिवानी चातुर्मास का है। युवाचार्यश्री महाश्रमणजी आचार्यवर के कक्ष में पधारे। आचार्यश्री ने पूछा- 'अमुक व्यक्तियों को व्यवस्थाविशेष के बारे में संवाद भेज दिया?' युवाचार्यश्री ने कहा- 'नहीं, अभी तक नहीं भेजा।' आचार्य महाप्रज्ञजी ने युवाचार्यवर को संदेश लिखवा दिया। फिर प्रश्न किया- 'यह संदेश किसके नाम से भेजोगे?' युवाचार्यश्री ने उत्तर दिया- 'मेरे नाम से भेजूंगा। मैं इन सब कार्यों से आचार्यश्री को मुक्त रखना चाहता हूं।' आचार्य महाप्रज्ञजी ने कहा- 'हमारे हाथ में तो तलवार ही है, ढाल तो तुम्हारे पास ही है।' युवाचार्यश्री ने निवेदन किया- 'ढाल तो प्रहार से बचाने के लिए होती है। जनाक्रोश आएगा तो वह मेरी ओर होगा, आचार्यश्री की ओर नहीं।' इस प्रसंग से आचार्यवर की गंभीरता का अंदाज लगाया जा सकता है।

आचार्य महाश्रमणजी ने अपने बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व के आधार पर अपने कर्तृत्व को प्राणवान् बनाया है। प्राणवान् कर्तृत्व वाला व्यक्ति ही अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह कर सकता है। कहा जाता है-"श्रद्धा ज्ञान देती है। नम्रता मान देती है। योग्यता स्थान देती है। इन तीनों का योग होने पर दुनिया सम्मान देती है।" आचार्यश्री महाश्रमणजी का वर्धापन श्रद्धा, विनय और योग्यता का वर्धापन है।

उनके आभामण्डल से विकीर्ण होने वाली रश्मियां संपूर्ण विश्व को नया आलोक प्रदान करें। आपके तेजोमय उपपात में आने वाला हर व्यक्ति अध्यात्म की दिशा में प्रस्थान के लिए संकल्पित हो, यही युग की अपेक्षा है।

युगप्रधान शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर अभिवंदना के स्वर

क्या आप महाश्रमण बनना चाहते हैं?

यदि हां, तो-

स्वयं को अध्यात्मनिष्ठा से भावित कीजिए। आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ को मुनि मुदित की अध्यात्मनिष्ठा ने इतना प्रभावित किया कि उन्हें महाश्रमण बना दिया।

- अपने भीतर करूणा का दरिया बहाइए। ऐसा दरिया जिसमें भीगे हुए हर प्राणी को परम शान्ति का अनुभव होने लगे। हमेशा दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझते हुए उसमें सहानुभूति उंडेलिए।
- वाणी में अमृत घोलिए। कठोर वचनों को अपने शब्दकोष में से निकाल दीजिए। किसी को उपालम्भ भी देना हो तो मधुर शब्दों में दीजिए।
- सत्य के पुजारी बनिए। सत्य से कभी समझौता न करें। दृढ़संकल्पित हो जाइए कि सत्य के लिए कोई कठिनाई आएगी तो उसे भी झेलेंगे। अपनी भाषा में प्रायः लगभग, शायद, लखावै, आसरै आदि शब्दों का प्रयोग बार-बार करते रहिए और निश्चयकारी भाषा से बचते रहिए।
- श्रम की चेतना जगाइए। दूसरों के कल्याण के लिए भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, धूप-छांह किसी की परवाह मत कीजिए। स्वेद-बूंदें बहाकर भी भक्तों की भावना पूर्ण कीजिए, भले ही प्रलम्ब विहारों को और प्रलम्ब करना पड़े। जनता को आशीर्वाद देने के लिए दिन भर हाथ ऊपर करते रहिए।
- सुविधाओं को खबरदार कहिए। स्वयं को इतना सहनशील बना लीजिए कि सुविधा का घुन लगने ही न पाए। उदाहरण के तौर पर शरीर भले ही पसीने से तरबतर हो जाए किन्तु कृत्रिम हवा से पूरा परहेज रखें। कदाचित् कक्ष में पंखा चल भी जाए तो तत्काल खड़े हो जाइए। इसी प्रकार स्वास्थ्य की अनुकूलता न हो या कभी बहुत लम्बे विहार (एक दिन में 47 किमी) हो तो भी हस्त-चलित साधन का प्रयोग न करें, भले ही वह पास में खाली चलता रहे।
- स्वाद को अलविदा कहिए। भोजन में बहुत सीमित द्रव्यों का सेवन करें। मिठाई, तली-फली चीजें, विविध प्रकार के नए-नए आइटम की ओर आंख भी मत उठाइए। हो सके तो चीनी मात्र का त्याग कर दीजिए और प्रतिदिन पांच विगय वर्जन करते रहिए। फिर भी किसी पदार्थ में स्वाद का भाव आ जाए तो तत्काल उसका त्याग कर दीजिए।
- हर पल मुस्कुराते रहिए। मुस्कान कितनों-कितनों की थकान मिटाकर उनमें प्राणों का संचार कर देती है। बिना कुछ कहे समाधान दे देती है। इस निश्छल मुस्कान से लोगों को अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होती है। इसलिए अपनी मधुर मुस्कान ऐसे लुटाइए जैसे कोई श्रेष्ठ दानवीर अपनी सम्पत्ति लूटा रहा हो।
- स्वयं को अलार्म बना लीजिए। जैसे 4 बजे की अलार्म लगाते हैं तो वह 4 बजे ही बजती है। न तो एक मिनट पहले और न ही एक मिनट बाद में। ठीक इसी प्रकार यदि आपको कोई कार्य 2 बजे करना है तो वह 1 बजकर 59 मिनट पर या 2 बजकर 1 मिनट पर नहीं, ठीक 2 बजे ही शुरू होना चाहिए। इसके लिए आप अपनी डायरी में नोट करके रखिए कि कौन-सा कार्य किस समय पर करना है। किस व्यक्ति से किस समय और कितने समय बात करनी है आदि। ऐसा करने से आपके सारे कार्य व्यवस्थित रूप से सम्पादित हो सकेंगे।

इस प्रकार महाश्रमण बनने के और भी अनेक टिप्स हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-

साध्वी शशिप्रभा
रोल न. 1573
अमृतायन, जैन विश्व भारती, लाडनूं

साधना के हेम शिखर हैं आचार्य श्री महाश्रमण

● साध्वी सुधांशुप्रभा ●

भारतीय संस्कृति के विकसित पुष्प युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ तथा आध्यात्मिक पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हुए श्रेष्ठता की अगम्य गहराइयों में पैठ कर मोती निकालने का कार्य कर रहे हैं। गंभीर अनुभवों और अपने सेवा-त्यागमय जीवन के द्वारा सभ्यता एवं संस्कृति के सारभूत तत्त्वों को जीवित रखने का प्रयास कर रहे हैं। जिनके शान्त चेहरे की ओर एक दृष्टि निक्षेप से ही दर्शक को शान्ति और आह्लाद प्राप्त होता है। विश्व के प्रांगण में कभी-कभी ऐसे व्यक्तित्व का उदय होता है जिनका जीवन अनेकों के लिए प्रेरणादायी बनता है। जिनकी वाणी में धर्म और दर्शन आकार लेते हैं, कथनी-करनी में समरसता होती है, जिनका जीवन ज्ञान-साधना-कर्म की प्रयोगशाला है, ऐसे कषाय विजेता व्यक्तियों की सतत् आत्मलक्षी जीवन साधना एवं प्रतिपादित मूल्यों के द्वारा ही मानवता ने आध्यात्मिकता में विकास किया है।

लगता है अथक परिश्रम मानस को अपार तृप्ति प्रदान करता है, अपराजेय साहस से महामारी या भूकम्प, मूसलाधार बरसात हो या विपदाओं की रात, कभी कदम पीछे नहीं हटते। चिन्तन की गहराई से प्रशासकीय गुणों के साथ आत्मानुशासन का नया सूर्य उदित करते रहते हैं। जलधि का गांभीर्य प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है। जागृत चेतना विषमताओं-विभावों-विजातीय वृत्तियों के कंटकों से परे 'असुभाओ नियट्टणं सुभाओ पयट्टणं' को जीवन सूत्र बनाकर जीवन में निहित परम श्रेय को समुपलब्ध कर रहे हैं।

दीर्घ यात्राओं में कठोर श्रम से शुष्क नहीं बने, ज्योतिर्मय नेत्र आशा एवं शान्ति का आश्वासन देते हैं, संतुलित व्यवहार अपने आलोक से सबको मुग्ध कर देता है। जहां कहीं भी पधारते हैं नई भावना एवं नए वातावरण का सृजन हो जाता है। जिस बहुमुखी व्यक्तित्व को न आयामों की संख्या में बांधा जा सकता है न कोणों की गणना हो सकती है। प्रत्येक दिशा में भिन्न छवि का आयाम प्रक्षेपित होता है, जिस कोण से दृष्टिपात करते हैं नया आयाम नजर आता है। प्रतिपल जागरूक रहना प्रतिदिन की चर्या है, कर्मठता की अर्चना है, लोक कल्याण नीति है, आत्मोत्थान हृदय की झंकार है, जीवन के प्रणीत यह सफलता का शिखर तेरापंथ की ऊंचाई को द्विगुणित कर रहा है। ऋजु हृदय में विराजित अनुकम्पा पूर्ण व्यवहार मृदुता से भरी वाणी, सेवा-सिद्धांतों के प्रति निष्ठा, साधना के हेम शिखर का स्पर्श कराने लगती है। कभी निराश और उदासीन जीवन के लिए आशा की किरण बन जाते हैं, युवाओं को आध्यात्मिकता में रंग जाने का परामर्श देते हैं, संस्थागत प्रवृत्तियों में पवित्रता रखने का प्रतिबोध देते हैं, कभी संघ समाज की विकासशील कार्यपद्धति में प्रोत्साहन देते हैं। भव्यात्माओं की शक्तियों का विनियोजन पारखी जौहरी की तरह करते हैं, आत्मविकास के स्वर्णिम सूत्रों से सबका मार्गदर्शन करते हैं। संवेगवर्द्धक प्रवचन अनेक व्यक्तियों के जीवन को ढालने में सिद्धहस्त बने हैं। जिनके जीवन का अवलोकन एवं व्यक्तित्व का विश्लेषण अपने आप में युग की कहानी का सृजन है। ऐसे समृद्ध विराट व्यक्तित्व को संयम की स्वर्ण जयंती पर बारम्बार अभिनंदन।

महाश्रमण में तुलसी का प्रतिबिम्ब

● साध्वी श्रेष्ठप्रभा ●

जैसे सूर्य सम्पूर्ण विश्व के अन्धकार को दूर करता है ठीक वैसे ही गुरु की वात्सल्य पूर्ण नज़रों ने मेरे अन्तः करण के अंधकार को छिन्न-भिन्न कर डाला। एक अनगढ पत्थर के रूप में मैं गुरु तुलसी के श्री चरणों में समर्पित हुई। उस पत्थर को प्रतिमा का रूप दिया गुरु तुलसी ने। उस प्रतिमा में संयम रूपी प्राण भरे श्रद्धेय आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने व उसी प्रतिभा को शिक्षा, संस्कार व सेवा इस त्रिवेणी से संस्कारित किया आचार्य श्री महाश्रमणजी ने। आज मैं पूज्यप्रवर के संयम जीवन की अर्ध सदी पर गुरुदेव श्री तुलसी के व्यक्तित्व व कर्तृत्व के साथ आचार्य श्री महाश्रमणजी के व्यक्तित्व व कर्तृत्व को जोड़ने का लघु प्रयास कर रही हूं।

मैंने अनुभव किया गुरुदेव तुलसी का प्रतिबिम्ब श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी में प्रतिबिम्बित हो रहा है। गुरुदेव श्री तुलसी जैसी चाल, गुरुदेव श्री तुलसी जैसा छोटा कद व गुरुदेव श्री तुलसी जैसे ही कुछ प्रसंग। समण श्रेणी की घटना है। गुरुदेव श्री तुलसी कंठस्थ चीजों की परीक्षा ले रहे थे। उसी क्रम में मेरा भी नम्बर आया। तमिल भाषा में शिक्षण प्राप्त करने के कारण कंठस्थ चीजों में मेरी अशुद्धियां भरपूर थी, लेकिन मैं उनसे अनजान थी। आचार्यप्रवर ने मुझसे लोगस्स पाठ का उच्चारण करवाया, मैंने पूरी तल्लीनता के साथ आंख बंद कर पूरा लोगस्स सुनाया। जब मैंने आंख खोली तो मैं दंग रह गई। पूरा माहौल हंसीमय बन गया था। न केवल साधु-साध्वियां हंस रहे थे अपितु परम पूज्य गुरुदेव भी इतने मुलका रहे थे कि मैं एक मिनट भी खड़ी नहीं रह सकी। शर्म व लज्जा से मेरी आंखें झुक गई। ठीक वैसा ही माहौल बना आचार्य श्री महाश्रमणजी के शासन काल में। सन् 2019 का पूज्य प्रवर का चातुर्मास कर्नाटक की राजधानी बैंगलोर में हुआ। उस समय हमें भी गुरु सन्निधि में अपनी जन्मभूमि में चातुर्मास करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। चातुर्मास की सम्पन्नता के बाद पूज्यप्रवर ने बहिर्विहारी साध्वियों की सामूहिक पृच्छा की। जिन-जिन की पृच्छा होती गई उन्हें पंक्ति में खड़े रहने का निर्देश प्राप्त हुआ। एक ओर अग्रगामी और दूसरी ओर अनुगामी की पंक्ति थी। जैसे ही साध्वी कीर्तिलताजी की पृच्छा सम्पन्न हुई साध्वीश्री अग्रगामी की पंक्ति में खड़े हो गए। लेकिन मैं विस्मृत हो गई कि मुझे कहां खड़ा होना है। मैं भी उन्हीं का अनुसरण करती हुई साध्वीश्री के पास खड़ी हो गई। पूज्यप्रवर की दृष्टि जैसे ही मुझ पर पड़ी। गुरुदेव ने फरमाया - 'तुम-तुम इधर नहीं। अभी तुम्हें इस पंक्ति में आने की देरी है।' मैं शर्मिंदा होकर दूसरी पंक्ति में चली गई। सारा वातावरण खुशनुमा बन गया।

गुरुदेव श्री तुलसी के शासन काल में मुझे अठाई की तपस्या करने की शक्ति श्री चरणों से मिली तो पुनः वह शक्ति श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के शासन काल में मुझे प्राप्त हुई और मैं आप के आभावलय में रह कर नौ की तपस्या कर पाई। मैं अपने लिए यही मंगल कामना करती हूं कि दीक्षा के अमृत महोत्सव की भांति हीरक जयंती का भी रसास्वादन कर सकूं।

युगप्रधान शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर अभिवंदना के स्वर

महाश्रमण गुरुवर गण के श्रृंगार हैं

● डॉ. साध्वी परमयशा ●

जिनशासन की करते जो जय-जयकार हैं,
तेरापंथ भिक्षु गण को जिनकी दरकार है।
ये महाश्रमण गुरुवर गण के श्रृंगार हैं।।
गुरु महाश्रमण -3

एकादशवें शास्ता में बसते हैं अष्टमंगल,
जंगल में मंगल करते आकर्षक अद्भूत कौशल।
अक्षय निधियों से भरते गण भंडार हैं।।

इस चातुरंत चक्री की सेवा में रतन अनेकों,
झूमर नेमानंदन की मुस्कान मनोहर देखो।
एक जीकारा देता नव उजियार है।।

महावीर हैं इस युग के दिखलाते नए नजारे,
श्री कृष्ण बुद्ध गांधी जिनमें हम सदा निहारे।
विजय पताका फहराते सुखकार हैं।।

जो महाऋषि महासाधक जिनसे गुलशन खिलता है,
पंडित है महिमा मंडित अज्ञान तिमिर हरता है,
युगप्रधान लाखों के तारणहार हैं।।

लय - सिरियारी में चलती जिनकी सरकार है

सूरज-सूरज का करता है अभिनंदन

● साध्वी सरस्वती ●

सूरज-सूरज का करता है अभिनंदन।
बुलबुल गाती गीत खुशी के, मुस्काता सारा मधुवन।।

चंदा मामा की किरणों ने, मांडी अद्भुत रंगोली,
सागर की लहरों ने सबकी, भर दी मोती से झोली।
युगों-युगों तक जय हो जय नेमानंदन।।

संध्या ने सिंदूर बिछाया, कण-कण दीप जला घी का,
जन्मभूमि में दीक्षा लेकर, अपना नव इतिहास लिखा।
नाचे धरती-अम्बर नाचे मलय पवन।।

स्वर्गिक सुख हे आर्यप्रवर! हम तुम चरणों में पाएंगे,
तेरी हर सांसों को छू, हम तो निहाल हो जाएंगे।
'सरस्वती' लाखों-लाखों के तुम भगवान।।

युगनायक ज्योतिर्मय प्रभु को युग-युग सदा निहारें हम,
ज्योतिचरण के श्री चरणों में, अपना भाग्य संवारें हम।
दीक्षा कल्याणक दिन पर शत-शत वंदन।।

लय - खड़ी नीम के

दीक्षोत्सव की यह अर्धसदी

● साध्वी भव्ययशा ●

दीक्षोत्सव की यह अर्धसदी, वर्धापन अवसर आया है।
नन्दनवन के हर पल्लव ने, अभिनव उन्मेष जगाया है।।

जय ज्योतिचरण जय महाश्रमण तुम विघनहरण मंगलकारी,
शासनमाता द्वारा उद्घोषित मंत्र बना भवभयहारी,
जिसने भी तेरा जाप जपा उसका सब संताप मिटा,
श्रद्धा से करते हम अर्चना।।

गुरुवर तेरे पदचिन्हों पर, अविरल में बढ़ती जाऊं,
तुझमें ही हो विश्राम मेरा, तेरे साए में पलती जाऊं,
हमने जाना पहचाना है, जग तेरा ही दीवाना है,
मेरी सासों ने धडकन ने, भगवान तुझे ही माना है,
मैं हर पल तुझको ध्याऊं, एक तुझमें ही रम जाऊं,
बस इतनी है दिल की आरजू।।

महावीर के शासन का, तुमने कितना सम्मान किया,
जैन एकता के स्वर को, सौहार्द पूर्ण बहुमान दिया,
हिंसा से सुलगते मानव को, मानवता का वरदान दिया,
नशा मुक्ति, नैतिकता सह, सद्भावों का अवदान दिया,
तेरी वाणी जग कल्याणी, जिनवाणी की शहनाणी,
चरणों में अर्पित है वन्दना।।

भि.भा.रा.ज.म.मा.डा.का.तु. महाप्रज्ञ के पट्टधर हो,
अज्ञान तिमिर को हरने वाले विश्व प्रकाशी दिनकर हो,
हे महाश्रमिक! तेरी श्रमबूदो ने, गण वन को विकसाया,
तुम महामेघ बनकर बरसे, सिंचन पाकर मन सरसाया,
हे युग प्रधान! हे युगनायक!, हे शान्तिदूत! शिवसुखदायक
उज्ज्वलतम संयम की साधना,
चरणों में अर्पित है वन्दना।।

लय - तेरी मिट्टी में मिल

वीतराग कल्पगणिवर

● साध्वी विनम्रयशा ●

तुलसी की कमनीय कलाकृति, महाप्रज्ञ ने जिसे संवारा।
जिनशासन की अभिनव आभा, महाश्रमण को नमन हमारा।।

मोहन से मुदित स्वरूप, श्रमनिष्ठा की अकथ कहानी।
महाश्रमण पद मिला निरामय, गुरु निष्ठा की प्रखर निशानी।
आर्य प्रवर महाश्रमण अलौकिक, चमका जग का भाग्य सितारा।।

मोहनी मुद्रा आर्यप्रवर की, पाप ताप संताप हरती।
नयनों की मुस्कान निराली, स्नेह का संचार करती।
वीतराग कल्प गणिवर ने, युग आस्था का रूप निखारा।।

करूणा सागर महाप्रभु की, आज्ञा निष्ठा ऊर्जा भरती।
शांतिदूत के अनुशीलन से, रोमांचित है अम्बर धरती।
प्रज्ञा ज्योत जलाए गुरुवर, गण को देते नया नजारा।।

दृष्टि में दैपेय लीला, सृष्टि में शाश्वत प्रभा है।
मर्यादा निष्ठा सुहानी, प्रवचन छटा सुरम्य शुभा है।
अमृत महोत्सव राष्ट्र संत का, नव मस्तक भूमंडल सारा।।

गुण गाथा को लिखूं कहां से

● साध्वी मधुयशा ●

नहीं समझ में आता मुझको, गुण गाथा को लिखूं कहां से।
गुरु महाश्रमण का जीवन है किताब, इसको मैं पढ़ूं कहां से।
प्रयास कर रही हूं गुरु का, लिखने को यह पुण्य चरित्र।
मेरा भी कुछ ज्ञान बढ़ेगा, होगा जीवन ज्ञान पवित्र।।

वैशाख शुक्ला नवमी को, सरदारशहर में दिव्य प्रकाश।
जन्म हुआ जैसे मोहन का, खुशियों से गूंजा आकाश।
नेमा मां के आंगन में, बजने लगी शहनाई थी।
झुमरमल पिता ने देखो, बांटी खूब बधाई थी।।

जो संस्कार मिले बचपन में, पाया जीवन में विस्तार।
मां के संरक्षण में रहकर, जागे भीतर के संस्कार।
12 वर्ष की अल्पायु में, बदली जीवन की पतवार।
मंत्री मुनि सुमेरमल जी द्वारा, संयम व्रत को कर स्वीकार।।

गुरु तुलसी की अनहद कृपा, महाश्रमण पद है पाया।
सुदूर क्षेत्रों की यात्रा कर, गण सुयश देखो खूब फैलाया।
श्रद्धा, सेवा और समर्पण से, जीवन को गतिशील बनाया।
गंगाशहर की पुण्य धरा पर, युवाचार्य का स्थान पाया।।

सरदारशहर में आकस्मिक ही, महाप्रज्ञ महाप्रयाण हुआ ।
महाप्रज्ञ पट्टधर कहलाए, चारों ओर गुणगान हुआ।
सब कुछ पाकर सब कुछ त्यागा, तुमको कुछ न भाया था।
लाडनूं में शासन माता से 'युगप्रधान' अवार्ड पाया था।।

रच दिए इतिहास अनेकों, किस-किस को बतलाऐंगे।
दिल्ली का वह दृश्य निराला, उसको भूल न पायेंगे।
उपलब्धियां जो पाई आपने, जन्म-जन्म तक गायेंगे।
आपश्री का व्यक्तित्व अलौकिक, इसको लिख न पायेंगे।।

ज्योतिचरण तेरी किरणों ने

● साध्वी डॉ. योगक्षेमप्रभा ●

ज्योतिचरण तेरी किरणों ने सागर का सम्मान किया है।
उछल-उछल कर लहरों ने तेरा गौरव गान किया है।।

तूं धरती का सूर्य अनूठा, नभ से तेरा गहरा नाता।
इच्छाओं के अम्बर को भी, संयम का तूं पाठ पढ़ाता।
कर संधान सत्य का तुमने, भू को नव अवदान दिया है।
ज्योतिचरण तेरी किरणों ने, सागर का सम्मान किया है।।

चाह न यश की दिखती किंचित्, खुद सम्मान द्वार पर आते।
सुख-दुःख को सम मान लिया तो, लाभ-अलाभ ना तुम्हें सताते।
सजग साधना-प्रहरी हो यह, जग ने भी पहचान लिया है।
ज्योतिचरण तेरी किरणों ने सागर का सम्मान किया है।।

स्वयं बने आगम अगम तुम, गहन ज्ञान के अविचल आकार।
प्रभु भक्ति में गौतम गणधर, मीरां, सुर, तुलसी, रत्नाकर।
परमाराधक रत्नत्रयी के 'अवधूत' हमने मान लिया है।
ज्योतिचरण तेरी किरणों ने सागर का सम्मान किया है।।

युगप्रधान शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर अभिवंदना के स्वर

महाश्रमण तो महाश्रमण हैं

● मुनि कमल कुमार ●

महाश्रमण की गरिमा-महिमा, सुनकर होता हर्ष अपार।
महाश्रमण को ध्याने वाला, बन जाता है गुण भंडार।।

लघुवय में दीक्षा लेकर के, ज्ञान-ध्यान का कर अभ्यास,
अपना वर व्यक्तित्व बनाया, जन-जन के मन में उल्लास।
अष्टादश वय में चिंतन, निर्णय सुन चकित हुए नर नार।।

साझपति व महाश्रमण पद, तुलसी गुरुवर का उपहार,
महाप्रज्ञ ने देख योग्यता, सौंप दिया गण का सब भार।
नेमां झूमर के नन्दन को, वन्दन करते बारम्बार।।

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, यात्राएं मंगलकारी,
अप्रमत्तता देख आपकी, नत मस्तक हैं संसारी।
दूरदर्शी हर कार्य आपका, फर्क नहीं है इसमें तार।।

दीक्षा की यह स्वर्ण जयंती, लेकर आई नव उत्साह,
देख आपके कार्य कर रहे, जैन-अजैन सभी वाह-वाह।
महाश्रमण तो महाश्रमण हैं, दिग्गज लोगों के उद्गार।।

एकादशवें अधिशास्ता हैं, वीतराग तुल्य साकार।
जुग-जुग जीओ नेमांनंदन, गाता है मुनि कमल कुमार।।

हमें महासंत मिला है

● साध्वी जगवत्सला ●

गौरवशाली शासन पाया, महाश्रमण सरताज,
कहीं विश्व में नजर न आया ऐसा सुंदर राज,
हमें महासंत मिला है, हमें महापंथ मिला है,
हमें महासंत मिला है, हमारा भाग्य खिला है।।

गुरु गणपाल है, महाश्रमण रिछपाल है,
सन्निधि तेरी पा सब खुशहाल है।
महिमा गाएं मुक्ति पाएं, तुम पर सबको नाज।।

इक गुरु शासना में, सारा संघ चलता,
गुरुवर की दृष्टि पा फूलता फलता।
कितना गाएं क्या बतलाएं, खुशिया बेअंदाज।।

चिंता से मुक्त भक्त, चिंता महासंत को,
निश्चिंत हम सारे पाकर निर्ग्रंथ को।
सेवा करता मेवा पाता, यही है सुख का राज।।

स्वर्ग से सुंदर यह, भिक्षु का शासन है,
भैक्षव शासन सही में नंदन वन है।
तूं ही सहारा, तारणहारा, तारण तरण जहाज।।

जय विजय पाओ ओ शासन माली,
सदा शिखर चढ़ो तपो कोड़ दिवाली।
रहो निरामय बनो चिरायु है दिल की आवाज।।

प्रभुवर का नाम रोशन-रोशन शासन,
प्रभु का काम रोशन और पैगाम रोशन।
नाम प्रभु का जपते-जपते सिद्ध मनोरथ काज।।

लय - स्वर्ग से सुंदर

जन जन के मसीहा

● मुनि अमन कुमार ●

करो करोड़ दिवाली राज प्रभुवर गण में,
मिले शासना भक्तों को क्षण-क्षण में।
उत्तम साधक, उत्तम चिंतक और वक्ता,
जिनवर वाणी से श्रोता कभी न थकता ।।

जो गुरु को तन-मन से नित उठकर ध्याता,
वो शिव पुर का है मार्ग स्वतः ही पाता।
ये श्रद्धा का दीपक कभी नहीं बुझ पाए,
बस शाम सवेरे यही भावना भाए।।

जन-जन के है मसीहा मेरे स्वामी,
भक्त जनों के प्रभुवर अंतर्यामी।
नियमित दिनचर्या प्रभुवर है विलक्षण,
शरणागत आकर हो जाता है धन-धन।।

'एगो में सासओ' में शाश्वत रहते,
है ध्यान की गंगा में विभुवर नित बहते।
करते सुश्रम कल्याण देखो स्व-पर,
प्रभु का सर पर कर लगता है जी सुखकर।।

समवसरण सा लगे नजारा प्यारा,
गूंजे है ज्योति चरण का देखो नारा।
है शांतिदूत सम्पूर्ण विश्व के ईश्वर,
हम धन्य हो गए ऐसे प्रभु को पाकर।।

मेरे अन्तरमन भगवान

● साध्वी पूनमप्रभा ●

झूमर नन्दन करते वन्दन, अर्पित तन-मन प्राण,
मेरे अन्तरमन भगवान।

मुस्कानों का बहता झरणा, आंखों से बहती है करूणा,
वत्सलता के महासमन्दर, महाप्रज्ञ के तुम हो पटृधर।
विनय, नम्रता और समर्पण, क्या गाएं यशगान।।

तुलसी सा व्यक्तित्व तुम्हारा, देव कुंवर सा रूप तुम्हारा,
गण गणपति से है इकतारी, महाप्रज्ञ तुलसी के पुजारी।
स्वर्गपुरी से दोनों गुरु का, मिलता है वरदान।।

रवि से तेजस्वी हो प्रभुवर, अंगद सी दृढ़ता है विभुवर,
चंदा सी शीतलता तुममें, वीर प्रभु सम प्रभुता तुममें।
एक तेरी दृष्टि में चलता, देखो सकल जहान।।

पग-पग चलने वाले भास्कर, जीओ वर्ष हजार आर्यवर,
समय प्रबन्धन देखा तुममें, स्ट्रेस हावी नहीं होता तुममें।
सात समन्दर कीर्ति पहुंची, जन-जन करे बखान।।

लय - कितना बदल गया इंसान

जन-जन के हो नयन सितारे

● मुनि काव्य कुमार ●

दीक्षा दिवस गुरुवर का आया,
जन जन के, मन हर्ष सवाया।
तुलसी गुरु की तुम हो छाया,
देख योग्यता शिखर चढ़ाया।।

माँ नेमा के नंदन प्यारे,
दुगड़ कुल के हो उजियारे।
तेरापंथ के हो ध्रुवतारे,
जन जन के हो नयन सितारे।।

जो तेरी सन्निधि में आता,
परमानन्द को है वह पाता।
चरण कमल में सिर है झुकाता,
कृत्य कृत्य वह हो जाता।।

मुनि सुमेर से हुए दीक्षित,
गुरु तुलसी से हुए शिक्षित।
श्री महाप्रज्ञ से हुए प्रशिक्षित,
विनय सर्मपण श्रम सेवा से हुए प्रभु विकसित।।

करोड़ दिवाली राज करो तुम,
मंगल कामना करते हैं हम।
सदा स्वस्थ रहो विभुवर तुम,
मंगल भावना भाते हैं हम।।

युग युग जीओ, आर्यदेव श्री महाश्रमण

● साध्वी भव्यप्रभा ●

युग युग जीओ, युग युग जीओ, आर्यदेव श्री महाश्रमण ।
जन्मोत्सव की शुभ बेला में, शत-शत वंदन अभिनंदन ।।

धन्य धरा सरदारशहर की, मोहन जैसा रत्न मिला,
शिक्षा दीक्षा उस भू पर ही, भाग्य अनोखा सबका खिला ।
छवि तुम्हारी देख सकें हम, मिल जाए ऐसा दर्पण ।।

शांतिप्रदायक जन उन्नायक, घट-घट व्यापी राम हो,
समता साधक, श्री आराधक, पावन तीरथ धाम हो।
शुद्धाचारी विमलविचारी, जय जय श्री जय ज्योतिचरण ।।

शांतिदूत की महरनजर, पाने को तरसे जन-जन,
जन्म-जन्म के क्लेश मिटे, आए गुरू की चरण शरण ।
ऋद्धि दायक, सिद्धि प्रदायक, गणनायक नेमानन्दन ।।

लम्बी लम्बी यात्राओं से, नव इतिहास रचाया है,
महावीर प्रतिनिधि गणमाली, गण का भाग्य सवाया है।
करूं प्रार्थना प्रभुवर तुमसे, धन्य दिवस जब हो दर्शन ।।

जन्मोत्सव, पट्टोत्सव आया, दीक्षोत्सव का शुभ अवसर,
संयमजीवन स्वर्ण जयंति, धर्मसंघ के भाव मुखर।
युगों-युगों तक करो शासना, करते भाव सुमन अर्पण ।

लय- कलयुग बैठा मार कुण्डली

संबोधि

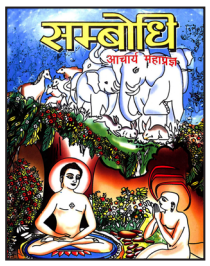

साध्य-साधन-संज्ञान

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

विचार अपने आप में न सम्यक् है, न असम्यक्। ग्राहक की बुद्धि के अनुसार वे ढल जाते हैं। शब्दों को जिस रूप में हम ओढ़ लेते हैं उसी रूप में वे दिखाई देते हैं। एक आस्थावान् व्यक्ति के लिए असम्यक् विचार भी सम्यक् रूप में परिणत हो जाते हैं और अनास्थावान् के लिए सम्यक् विचार भी असम्यक् रूप में। राग-द्वेष और स्वार्थवश सम्यक् विचारों को असम्यक् का रूप देने वाले व्यक्ति कम नहीं हैं, कम हैं प्रतिकूल को अनुकूल में बदलने वाले। भगवान् महावीर के लिए संगम-कृत अनुकूल और प्रतिकूल कष्ट भी कर्म-निर्जरण के लिए बन गए। अनार्य मनुष्यों की त्रासना से वे उद्विग्न नहीं बने। आचार्य भिक्षु से किसी ने कहा- तुम्हारा मुंह देखा है इसलिए मुझे नरक मिलेगा। आचार्य भिक्षु ने पूछा- तुम्हारा मुंह देखने से क्या मिलता है? वह बोला- स्वर्ग। आचार्य भिक्षु ने कहा- मेरी यह मान्यता नहीं है लेकिन तुम्हारे कहने से मैं स्वर्ग में जाऊंगा और तुम! वह खिसियाना मुंह बनाकर चलता बना।

अमेरिका के छह राष्ट्रपतियों के सलाहकार बनार्ट वरूच की वाणी अध्यात्म-निष्ठा की एक गहरी छाप छोड़ती है। किसी ने उनसे पूछा- 'क्या आप अपने शत्रुओं के आक्षेपों से दुःखी होते हैं?'

उन्होंने कहा- 'कोई व्यक्ति मुझे न तो दुःखी कर सकता है और न नीचा दिखा सकता है। मैं उसे ऐसा कभी करने नहीं दूंगा। लाठियां तथा पत्थर मेरी पीठ को तोड़ सकते हैं, पर शब्द मुझे चोट नहीं पहुंचा सकते।'

२०. ऊर्ध्वं स्रोतोऽप्यधस्स्रोतः, तिर्यक्स्रोतो हि विद्यते।
आसक्तिर्विद्यते यत्र, बंधनं तत्र विद्यते॥

उपर स्रोत है, नीचे स्रोत है और मध्य में भी स्रोत है। जहां आसक्ति–स्रोत है, वहां बंधन है।

२१. यावन्तो हेतवो लोके, विद्यन्ते बन्धनस्य हि।
तावन्तो हेतवो लोके, मुक्तेरपि भवन्ति च ॥

इस लोक में जितने कारण बंधन के हैं, उतने ही कारण मुक्ति के हैं।

कर्म परमाणु हैं। वे समस्त लोकाकाश में परिव्याप्त हैं। आत्म-प्रदेशों में उनके समागमन का मार्ग कोई एक नहीं है। वे सब ओर से आत्मा में आते रहते हैं। पूर्ण निवृत्त-निरोध अवस्था में ही उनका आकर्षण नहीं होता; क्योंकि उस समय आत्मा की समस्त प्रवृत्तियों की चंचलता रुक जाती है। जहां प्रवृत्तियों का प्रवाह है वहां बंधन भी है। प्रवृत्तियों के दो रूप हैं-अशुभात्मक और शुभात्मक। कहीं तीन प्रवृत्तियों का उल्लेख भी मिलता है– अशुभात्मक, शुभात्मक और शुद्धात्मक। अशुभात्मक प्रवृत्ति से अशुभ कर्म का संग्रह होता है और शुभ प्रवृत्ति से शुभ कर्म का। शुद्धात्मक प्रवृत्ति केवल आत्मा की शुद्ध अवस्था है। वस्तुतः वह प्रवृत्ति नहीं, किंतु आत्मा का मूल स्वभाव है। वहां कर्म का आकर्षण नहीं होता। आत्मा की शुभ और अशुभ प्रवृत्ति के साथ ही कर्म परमाणुओं का प्रवेश होना प्रारंभ हो जाता है।

बन्धन और मुक्ति सापेक्ष शब्द हैं। बंधन का क्षय मुक्ति है और मुक्ति की अप्रवृत्ति बंधन है। मुक्ति के और बंधन के कारणों में कोई विशेष अंतर नहीं होता। अंतर इतना ही होता है कि एक दूसरे रूप में बदलना होता है। स्थूल दृष्टि से दोनों बिलकुल विरोधी लगते हैं। सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर आत्मोन्मुखी प्रवृत्ति ही बंधन का विनाश है। बंधन के कारण हैं– मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग। ये सब बहिरात्मा की प्रवृत्तियां हैं। आत्मा जब स्वरूपस्थ होती है तब उसकी प्रवृत्तियां बन जाती हैं-सम्यक्त्व, विरति, अप्रमाद, अकषाय और अयोग। इनका भाव उनका अभाव है और उनका भाव इनका अभाव।

२२. सर्वे स्वरा निवर्तन्ते, तर्कस्तत्र न विद्यते।
ग्राहिका न मतिस्तत्र, तत्साध्यं परमं नृणाम् ॥

जिसे व्यक्त करने के लिए सारे स्वर-शब्द अक्षम हैं, तर्क की जहां पहुंच नहीं है, बुद्धि जिसे पकड़ नहीं सकती, वह आत्मा मनुष्यों का परम साध्य है।

इस श्लोक में आत्म-स्वरूप का प्रतिपादन है। आत्मा अमूर्त है। वह शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती। वह अनुभूतिगम्य है। उसे तर्क द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता। वह बुद्धि द्वारा ग्राह्य नहीं है। आचारांग सूत्र में इसके स्वरूप का विशेष वर्णन है। (क्रमशः)

श्रमण महावीर

भय की तमिस्त्रा : अभय का आलोक

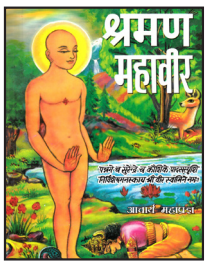

यह परमात्मपद तक पहुंचने की आध्यात्मिक प्रक्रिया है। अतः कोई भी महान् साधक इसका अतिक्रमण नहीं कर पाता।

२. यह साधना का दूसरा वर्ष है। भगवान महावीर दक्षिण वाचाला से उत्तर वाचाला की ओर जा रहे हैं। उन्होंने कनकखल आश्रम के भीतर से जाने वाले मार्ग को चुना है। वे कुछ आगे बढ़े। रास्ते में ग्वाल मिले। उन्होंने कहा, 'भंते! इधर से मत जाइए।'

'क्या यह मार्ग उत्तर वाचाला की ओर नहीं जाता?'

'भन्ते! जाता है।'

'क्या यह बाहर से जाने वाले मार्ग से सीधा नहीं है?'

'भन्ते! सीधा है।'

'फिर! इस मार्ग से क्यों नहीं जाना चाहिए मुझे?'

'भन्ते! यह निरापद नहीं है।'

'किसका डर है इस मार्ग में?'

'भन्ते! इस मार्ग के पास चंडकौशिक नाम का सांप रहता है। वह दृष्टिविष है। जो आदमी उसकी दृष्टि के सामने आ जाता है, वह भस्म हो जाता है। कृपया आप वापस चलिए।'

महावीर का मन पुलकित हो गया। वे अभय और मैत्री दोनों की कसौटी पर अपने को कसना चाहते थे। यह अवसर सहज ही उनके हाथ आ गया। उन्होंने साधक की भाषा में सोचा, मूढ़ आत्मा जिसके प्रति विश्वस्त है उससे अधिक दूसरा कोई भय का स्थान नहीं है। वह जिससे भयभीत है, उससे अधिक दूसरा कोई अभय का स्थान नहीं है।

बेचारे ग्वाले देखते ही रह गये। महावीर के चरण आगे बढ़ गये।

महावीर का आज का ध्यान-स्थल देवालय का मंडप है। वही मंडप विषधर चंडकौशिक की क्रीड़ा-स्थली है। भगवान् मंडप के मध्य में कायोत्सर्ग की मुद्रा में खड़े हैं। दोनों हाथ नीचे झूल रहे हैं। उनकी अंगुलियां घुटनों को छू रही हैं। एडियां सटी हुई हैं। पंजों के बीच में चार अंगुल का अन्तर है। अनिमेष चक्षु नासाग्र पर टिके हुए हैं। शरीर शिथिल, वाणी मौन, मंद श्वास और निर्विचार मन। भगवान ध्यानकोष्ठ में पूर्णतः प्रवेश पा चुके हैं। बाह्य जगत् और इन्द्रिय-संवेदनाओं से उनका सम्बन्ध विच्छिन्न हो चुका है। अब उनका विहार अन्तर-जगत् में हो रहा है। वह जगत् ईर्ष्या, विषाद, शोक, भय आदि मानसिक दुःखों की सम्बाधा और सर्दी, गर्मी, विष, शस्त्र आदि शारीरिक दुःखों की संवेदना से अतीत है।

चंडकौशिक जंगल में घूमकर देवालय में आया। मंडप में प्रवेश करते ही उसने भगवान को देखा। मंडप वर्षों से निर्जन हो चुका था। उसके परिपार्श्व में भी पैर रखने में हर आदमी सकुचाता था। फिर उसके भीतर आने और खड़े रहने का प्रश्न ही क्या? चंडकौशिक ने आज पहली बार अपने क्रीड़ास्थल में किसी मनुष्य को देखा। वह क्षणभर स्तब्ध रह गया। दूसरे ही क्षण उसका फन उठ गया। दृष्टि विष से व्याप्त हो गई। भयंकर फुफकार के साथ उसने महावीर को देखा। तीसरे क्षण उसने खड़े व्यक्ति के गिर जाने की कल्पना के साथ उस ओर देखा। वह देखता ही रह गया कि वह व्यक्ति अभी भी खड़ा है और वैसे ही खड़ा है जैसे पहले खड़ा था। उसकी विफलता ने उसमें दुगुना क्रोध भर दिया। वह कुछ पीछे हटा। फिर वेग के साथ आगे आया और विषसंकुल दृष्टि से भगवान को देखा। भगवान पर उसका कोई असर नहीं हुआ। उसने तीसरी बार सूर्य के सामने देख दृष्टि को विष से भरा और वह भगवान पर डाली। परिणाम कुछ भी नहीं हुआ। भगवान अब भी पर्वत की भांति अप्रकंप भाव से खड़े हैं।

चडकौशिक का क्रोध सीमा पार कर गया। वह भयंकर फुफकार के साथ आगे सरका। आटोप से उछलता हुआ फन, कोप से उफनता हुआ शरीर, विष उगलती हुई आखें, असि-फलक की भांति चमचमाती जीभ इन सबकी ऐसी समन्विति हुई कि रौद्र रस साकार हो गया। (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

कायसिद्धि का प्रयोग

जैन आगम साहित्य में पांच शरीर बतलाए गए हैं-

१. औदारिक शरीर -

यह शरीर स्थूल पुद्गलों से निष्पन्न होता है। इसमें हाड़, मांस, रक्त आदि होते हैं। यह मनुष्यों व तिर्यञ्चों (पशु-पक्षी आदि) के ही होता है।

२. वैक्रिय शरीर -

इस शरीर से छोटापन, बड़प्पन, एकरूप, अनेक रूप आदि विविध क्रियाएं की जा सकती हैं इसलिए इसे वैक्रिय शरीर कहा जाता है। इसमें हाड़, मांस, रक्त आदि नहीं होते। यह जन्मतः देवों और नारकों में होता है। लब्धितः मनुष्यों में भी हो सकता है। यह शरीर वायु में भी माना गया है।

३. आहारक शरीर -

यह एक विशिष्ट प्रकार का शरीर है। यह बहुत सुन्दर होता है। चतुर्दश पूर्वधर मुनि विशेष स्थिति में अपने साधना बल से इस शरीर का निर्माण करते हैं और अपना आवश्यक कार्य इसके माध्यम से सम्पन्न करते हैं।

तत्त्वों में कोई शंका होने पर तीर्थकर या केवली के निकट जाने के लिए लब्धिधर मुनि अपने शरीर में से एक हाथ का पुतला निकालते हैं एवं उस पुतले को तीर्थकर या केवली के पास भेजते हैं। यह पुतला वहां से उत्तर लेकर मुनि के शरीर में प्रवेश कर प्रश्न का उत्तर देता है। यह समूची क्रिया अत्यन्त अल्पकाल में ही सम्पन्न हो जाती है। प्रश्नकर्ता को पता ही नहीं चलता कि मैंने उत्तर विलम्ब से पाया है।

४. तैजस शरीर -

यह सूक्ष्म शरीर है, तेजोमय है। इसे विद्युत् शरीर भी कहा जाता है। यह सभी सांसारिक प्राणियों में निरन्तरतया विद्यमान रहता है। इसके अंगोपांग नहीं होते हैं।

५. कार्मण शरीर -

ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मों के पुद्गल-समूह से जो शरीर बनता है, वह कार्मण शरीर है। यह भी प्रत्येक सांसारिक प्राणी के निरन्तरतया रहता है। यह चतुःस्पर्शी और सूक्ष्मतर होता है।

आत्मा का शरीर से सर्वथा छुटकारा संसारी अवस्था में कभी नहीं होता। केवल मोक्षावस्था में ही आत्मा सर्वथा अशरीर बनती है। इसीलिए, सिद्ध और मुक्त आत्मा का एक नाम है अशरीरी। आत्मा अमन और अवाक् तो संसारी अवस्था में भी बन जाती है। परन्तु वह अशरीर एकमात्र सिद्धावस्था में बनती है। साधक का अंतिम लक्ष्य होता है अशरीर अवस्था को प्राप्त करना। उस अवस्था को प्राप्त करने के लिए भी शरीर को साधन बनाया जाता है। साधना के विभिन्न प्रयोग इसी शरीर के द्वारा किए जाते हैं, इसीलिए कहा गया है- **'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्।'** धर्म का प्रथम साधन शरीर है, यह उसका उज्ज्वल पक्ष है।

शरीर एक साधन है। उसका प्रयोग धर्म-कार्यों में भी किया जा सकता है और पाप-कार्यों में भी। हिंसा, चोरी आदि विभिन्न अपराध और पाप भी इस शरीर के द्वारा किए जाते हैं, इसीलिए यह कहना भी गलत नहीं होगा– **शरीरं पाप साधनम्** शरीर पाप का साधन है। यह व्यक्ति के विवेक पर निर्भर है कि वह उसे धर्म का साधन बनाता है अथवा पाप का साधन। आध्यात्मिक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति और साधना-समर्पित व्यक्ति उसे धर्म का साधन बनाता है।

कायक्लेश क्या है?

निर्जरा के बारह प्रकारों में पांचवां प्रकार है- 'कायक्लेश'। इस तप के अन्तर्गत व्यक्ति अपने शरीर को धर्म का साधन बनाता है। काय का अर्थ है शरीर और क्लेश का अर्थ है तपाना, बाधित करना अथवा साधना। जिस प्रकार शस्त्र को सुतीक्ष्ण बनाने के लिए उस पर धार की जाती है उसी प्रकार शरीर को साधना के योग्य बनाने के लिए कायक्लेश तप आवश्यक है। यह एक कायसिद्धि का प्रयोग है। इसके द्वारा शरीर की सहिष्णुता को बढ़ाया जा सकता है।

कायसुखाभिलाषत्यजनं कायक्लेशः-

शरीर को सुख मिले, सुविधाएं मिलें, ऐसी भावना को त्यागना कायक्लेश है।

कायोत्सर्गाद्यासनकरणं कायक्लेशः–

कायोत्सर्ग, आसन आदि का प्रयोग करना कायक्लेश है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री भारीमालजी युग

मुनिश्री जीवोजी (गंगापुर) दीक्षा क्रमांक : 86

मुनिश्री तप साधक थे। आपने आयम्बिल वर्धमान तप की आराधना प्रारम्भ की। इस तप में एक आयंबिल से शुरू करके साधक दो, तीन, चार से सौ तक चढ़ता है और पारणे में उपवास करता है। इस तप में 5050 आयंबिल और 100 उपवास होते हैं। इसे पूरा करने में 14 वर्ष 3 मास 20 दिन लगते है। मुनिश्री 44 की श्रेणी तक चढ़े। इसमें उन्होंने 990 आयम्बिल और 44 उपवास किए। इस प्रकार 1034 दिन अर्थात दो वर्ष साढे 10 महीने लगातार तपस्या की। तेरापंथ धर्मसंघ में यह सर्वोत्कृष्ट तप था। इसके अतिरिक्त उपवास, बेला आदि खुला तप भी मुनिश्री ने बहुत किया।

– साभार: शासन समुद्र –

अप्रैल 2024 सप्ताह के विशेष दिन

20 मई	भगवान विमलनाथ च्यवन कल्याणक
21 मई	भगवान अजितनाथ च्यवन कल्याणक
22 मई	आचार्यश्री महाश्रमण जी का 51वां दीक्षा दिवस
23 मई	पक्खी

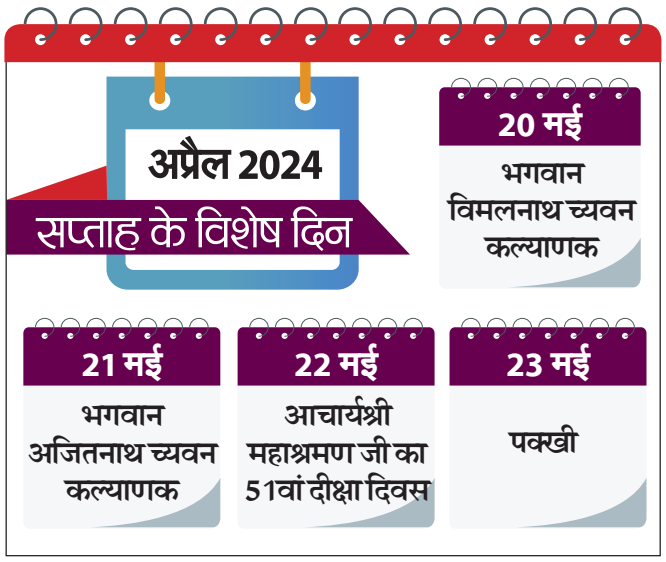

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

विपदा की स्थिति में स्वयं बने सशक्त और दूसरों के सहायक

चेन्नई।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् चेन्नई द्वारा दो दिवसीय तमिलनाडु स्तरीय फिजिकल एम्पावरमेंट कैम्प तेरापंथ सभा भवन, साहुकारपेट में प्रारम्भ हुआ।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा के निर्देशन में पहले तमिलनाडु स्तरीय कैम्प में आरक्कोणम स्थित नेशनल डिजास्टर रिस्पांस फोर्स (एनडीआरएफ) के सब इंस्पेक्टर प्रदीप भट्ट अपनी टीम के साथ किशोरों को प्रशिक्षण देने पहुंचे। किसी भी विपरीत परिस्थिति मैं स्वयं सुरक्षित रहते हुए दूसरों को भी सुरक्षित रखने के विभिन्न तरीकों का प्रशिक्षण इस शिविर में प्रदान किया गया।

कैम्प का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक स्मरण के साथ हुआ। जैन संस्कारक स्वरूप चन्द दांती, हनुमान सुकलेचा ने विविध मंगल मंत्रोच्चार के साथ जैन संस्कार विधि से कैम्प का मंगल शुभारम्भ करवाया। टीटीएफ राष्ट्रीय संयोजक मनीष पटावरी ने ऑनलाइन वीडियो कांफ्रेंसिंग से जुड़ कर शुभकामनाओं के साथ बताया कि अभातेयुप का सामाजिक सेवा के विशिष्ट आयाम तेरापंथ टास्क फोर्स (टीटीएफ) के अन्तर्गत समाज के नौनिहाल किशोरों को प्रशिक्षित करने के लिए देश के अलग-अलग हिस्सों में ऐसे शिविरों का समय-समय पर आयोजन किया जाता है।

उन्होंने एनडीआरएफ टीम की सक्रिय सेवाओं के लिए साधुवाद दिया एवं सभी किशोरों का अभिनन्दन किया। तेयुप अध्यक्ष दिलीप गेलड़ा ने स्वागत स्वर प्रस्तुत करते हुए एनडीआरएफ टीम सदस्यों का तेयुप की ओर से सम्मान किया। इस कैम्प में 25 किशोर सहभागी बन प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। मंत्री कोमल डागा ने आभार ज्ञापन दिया।

उत्कृष्ट समाज सेवा हेतु अभिनन्दन

गंगाशहर।

मेडिकल कॉलेज, पीबीएम अस्पताल के अन्तर्गत हल्दीराम कार्डियोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. पिन्टू नाहटा का उनकी बेहतरीन समाज सेवा के लिए अभिनन्दन साध्वी चरितार्थप्रभा जी व प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में किया गया।

साध्वीवृन्द ने कहा कि चिकित्सक मानव सेवा का बेहतरीन कार्य करते हैं। उनकी सेवा के कारण ही समाज में स्वास्थ्य की देखरेख व इलाज सुचारु रूप से होता है। उन्होंने जीवन में सेवा भाव होना आवश्यक बताया। एवं डॉ. पिन्टू नाहटा की चारित्रात्माओं के प्रति सेवा भावना के लिए साधुवाद दिया।

अभिनन्दन पत्र का वाचन तेरापंथी महासभा के संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़ ने किया। नवरतन बोथरा उपाध्यक्ष, अध्यक्ष अमरचन्द सोनी, मांगीलाल लुनिया व सहमंत्री पवन छाजेड़ ने अभिनन्दन पत्र एवं साहित्य भेंट किया।

प्रेक्षाध्यान पत्रिका के सम्पादक जैन लूणकरण छाजेड़ ने भी सम्पादकीय अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए कहा कि हृदय रोग के इलाज में ध्यान व योग के द्वारा जीवन शैली को सुधारने का जो प्रयास जन-जन में डॉ. पिन्टू नाहटा कर रहें हैं वो स्वागत व अभिनन्दन योग्य है।

डॉ. पिन्टू नाहटा ने कहा कि बीकानेर के हल्दीराम कार्डियोलॉजी विभाग का नाम आज दूर-दूर क्षेत्रों में विख्यात है। सेन्टर में योगा पार्क का निर्माण करवाया गया है। उन्होंने कहा कि चारित्रात्माओं के साथ-साथ मानव सेवा का कार्य करने से एक सुकून मिलता है।

पौध को सींचे कार्यशाला का आयोजन

गंगाशहर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित पौध को सींचे कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर द्वारा शांतिनिकेतन में साध्वी चरितार्थप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजल प्रभाजी के सान्निध्य में किया गया।

साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि बच्चों से दिल की बात करें, प्यार करें। उन पर अनुशासन थोपे नहीं, स्वयं अनुशासन में रहें, उनसे संवाद करें और इस प्रश्न का उत्तर खोजें कि बच्चा आपका है या मोबाइल का।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के साथ किया गया। मंडल उपाध्यक्ष प्रेम बोथरा ने सभी का स्वागत किया।

अंकिता सेठिया व तमन्ना भूरा ने नाटिका के माध्यम से बताया कि बच्चे तनाव में आकर कैसे गलत कदम उठा लेते हैं। साध्वी वैभवयशा जी ने कहा कि बच्चों की पहली प्रशिक्षिका उनकी मां होती है, उन्हें संस्कार गर्भ से ही दिए जाने चाहिए। मुख्य वक्ता राजकीय विद्यालय के प्रधानाचार्य रतन छल्लानी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि माता-पिता को बच्चों से संवाद करना चाहिए।

दादा-दादी, नाना-नानी उनके साथ समय बिताएं व कहानियों के माध्यम से उनमें संस्कारों का बीजारोपण करें। अपने बच्चों को बेस्ट बनाएं बॉस नहीं। मंडल अध्यक्ष संजू लालानी ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन अंकिता सेठिया ने किया।

संक्षिप्त खबर

वर्षीतप करने वाले 21 तपस्वियों का अभिनंदन

छोटी खाटू। तेरापंथ सभा छोटी खाटू के तत्वावधान में वर्षीतप करने वाले 21 तपस्वियों का अभिनंदन जूम मीटिंग के माध्यम से किया। जिसमें पूरे देश से प्रवासी खाटूवासी भी शामिल हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने की। छोटी खाटू सभाध्यक्ष ताराचंद धारीवाल ने सभी का स्वागत किया। सवाईचंद भंडारी ने नमस्कार महामंत्र का पाठ किया एवं मंगलाचरण किशनगढ़ से बहनों ने किया। तपस्वियों के अभिनंदन में अभय डूंगरवाल व शुभनेश डुंगरवाल ने गीत प्रस्तुत किए। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा नीलम सेठिया का सारगर्भित वक्तव्य हुआ। बिमल चंद भंडारी एवं मंगलचंद डूंगरवाल ने तपस्वियों का अभिनंदन किया।

महासभा अध्यक्ष सेठिया ने सभी तपस्वियों का अभिनंदन करते हुए 2026 के छोटी खाटू मर्यादा महोत्सव को सफलतम बनाने की प्रेरणा दी। सुप्रसिद्ध गायक सिरसा से अमित सिंघी एवं तेजपुर से धर्मेंद्र बोथरा ने विशेष रूप से उपस्थित होकर अपने गीतों से सबको प्रसन्न कर दिया। रेणु बोथरा ने जूम मीटिंग का संचालन कुशलता से किया। संकलन गणपत भंडारी ने, संयोजन गौतम डूंगरवाल एवं अंकुश बैद ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री विकास सेठिया ने किया।

शिवकाशी में मंगल भावना समारोह का आयोजन

शिवकाशी। तेरापंथ सभा शिवकाशी के तत्वावधान में डागा निवास के प्रांगण में मुनि रश्मिकुमार जी का मंगल भावना समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र और जाप से हुई। मुनिश्री ने कहा कि अपना कल्याण तो धर्म से ही होगा, समता रखें, राग द्वेष से मुक्त रहने की कोशिश करें, क्रोध न करें, इधर-उधर की बातों में नहीं उलझें, धार्मिक पुस्तकें पढ़ें। मंगलाचरण प्रियंका आंचलिया और संजू आंचलिया ने किया। शिवकाशी के वरिष्ठ श्रावक नौरत्नमल डागा ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। सभा अध्यक्ष मदनलाल डागा ने अपने विचार व्यक्त किए। सरिता आंचलिया, सज्जन डागा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा रानी बरडिया, प्रतिभा आंचलिया, प्रेम बैद आदि ने अपने-अपने भाव गीतिका और कविता के माध्यम से व्यक्त किये। महिला मंडल की वरिष्ठ श्राविका सम्पत देवी डागा ने स्वरचित 22 दोहों के द्वारा मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम का कुशल संचालन दीप्ति बैद ने किया। धन्यवाद ज्ञापन तेरापंथ महिला मंडल मंत्री बेला कोठारी ने किया।

ज्वाइंट स्क्रीनिंग कैंप का आयोजन

बेंगलुरु। तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर राजाजीनगर में अहमदाबाद के ऑर्थो सर्जन डॉक्टर धीरज मरोठी के निर्देशन में ज्वाइंट स्क्रीनिंग कैंप का आयोजन किया गया। रियायती दरों पर समायोजित इस शिविर में एपिक मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल अहमदाबाद के डॉ धीरज मरोठी ने मरीजों की हड्डी से संबंधित समस्याओं का उचित समाधान प्रदान किया। कार्यक्रम के शुभारंभ में तेयुप अध्यक्ष रजत बैद एवं तेरापंथ सभा राजाजी नगर अध्यक्ष रोशन लाल कोठारी ने डॉ. मरोठी का स्वागत किया।

शिविर में 25 लाभार्थियों ने परामर्श प्राप्त किया। संयोजक विनय बैद जानकारी देते हुए बताया कि शिविर के आयोजन में पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य एवं संचालन समिति से विनोद कोठारी, वंदना कोठारी, जतिन बोराणा आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

संक्षिप्त खबर

महावीर का हर क्षण अप्रमाद की साधना के लिए था समर्पित

हिम्मत नगर। जिनका जन्म समग्र जीवों के सुख का हेतु बन गया, जिनका समग्र जीवन प्राणी मात्र के कल्याण के लिए था, जिनका हर क्षण अप्रमाद की साधना के लिए समर्पित था। एक ऐसा महापुरूष जो सदियां बीतने के बाद भी सदा नवीनता लिए है। जिसने 'एका मानव जाति' का नारा दिया ऐसे महापुरूष का नाम है भगवान महावीर। हिम्मत नगर गुजरात में मंदिर मार्गी व तेरापंथी संतों के संयुक्त तत्वावधान में महावीर जयंती का कार्यक्रम आयोजन किया गया। मुनि आकाश कुमारजी ने भगवान महावीर की वीरता के अनेक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उनकी क्षमाशीलता तथा सहिष्णुता के बारे में बताया व भगवान महावीर बनने की दिशा में आगे बढ़ने कि प्रेरणा दी। मुनि विनीत कुमारजी ने भगवान महावीर की महानता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जिन शासन के सभी वर्गों में परस्पर सद्भाव बना रहे। आचार्य पन्यास ह्रींकारसुंदरविजय जी ने श्रीपाल-मैना सुंदरी के जीवन के माध्यम से आयंबिल की महत्ता बताई व महावीर जन्म कल्याणक पर मंगल कामना व्यक्त की।

कृत्रिम अंग दान एवं निःशुल्क मधुमेह परीक्षण का आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता। तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल, कोलकाता ने महावीर जयंती के अवसर पर सेवा कार्य के अंतर्गत महावीर सेवा सदन में 5 विकलांग जरूरतमंद लोगों को कृत्रिम अंगों का दान किया। संस्थान के संचालक ने कहा कि तेरापंथ युवक परिषद पूर्वांचल कोलकाता ने इन विकलांग जरूरतमंद लोगों को कृत्रिम अंग प्रदान कर इनके जीवन में एक नई शक्ति प्रदान की है जिसके द्वारा ये सब अपने जीवन में आत्मसम्मान के साथ आगे बढ़ेंगे और इस सेवा कार्य के लिए तेयुप के प्रति आभार प्रकट किया एवं परिषद के उज्जवल भविष्य की मंगल कामना की।

इस कार्यक्रम में अध्यक्ष संदीप सेठिया, सहमंत्री प्रथम एवं सेवा कार्य प्रभारी यशवर्धन श्यामसुखा, कोषाध्यक्ष हर्ष सिरोहिया ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। इसी अवसर पर आयोजित अन्य कार्यक्रम में तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नॉस्टिक सेंटर में 43 जरूरतमंद लोगों का निःशुल्क मधुमेह परीक्षण मधुमेह विशेषज्ञ डॉक्टर ए. के. जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम में एटीडीसी सलाहकार रवि दुगड़, संयोजक रोहित धारेवा, निवर्तमान मंत्री हेमंत बैद, कार्यकारिणी सदस्य एवं विशेष आमंत्रित सदस्य धर्मेन्द्र बुच्चा की उपस्थिति रही।

कॅरियर काउंसलिंग कार्यक्रम

हैदराबाद। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, हैदराबाद द्वारा आयोजित करियर काउंसलिंग प्रोग्राम कोटी विद्या स्कूल जेलापल्ली में सफलतापूर्वक आयोजित हुआ। लगभग 80 विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम का लाभ उठाया और बहुत ही उत्सुकता से हर कोर्स के बारे में जाना। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र से कार्यक्रम संयोजक दीक्षा सुराणा और मंत्री निखिल कोटेचा द्वारा किया गया। टीपीएफ अध्यक्ष पंकज संचेती ने कॅरियर काउंसलिंग की उपयोगिता बताई। दीपक संचेती ने लॉ के बारे में और नवीन सुराना ने सीए कोर्स के बारे में बताया। तुषार चोपड़ा ने बच्चों को साइंस और डॉक्टरी की राह दिखाई और पीयूष सेठिया ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बारे में बताया। दीक्षा सुराणा ने सभी बच्चों को सपने देखने और सही मार्गदर्शन व मेहनत से उन्हें पूरा करने की प्रेरणा दी। अंत में मंत्री निखिल कोटेचा ने सचिन सोनी एवं कोटी विद्या स्कूल का आभार प्रकट किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **नोएडा।** लूणकरणसर निवासी नोएडा प्रवासी इंद्रचंद-अनीता चोपड़ा की सुपौत्री, अनिल-प्रतिभा चोपड़ा की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक राकेश जैन, तेयुप अध्यक्ष जयंत सुराणा, बजरंग डोसी एवं छतरसिंह चौरड़िया ने मंगलभावना यंत्र की विधिवत स्थापना कराई एवं पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से नामकरण सानन्द संपादित करवाया।

■ **सूरत।** भोपाल निवासी सूरत प्रवासी सुनील जैन के सुपुत्र रौनक-ख्याति जैन की सुपुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश डाकलिया एवं सुशील गुलगुलिया ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानंद संपन्न करवाया गया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **सूरत।** बेला (कच्छ) निवासी सूरत प्रवासी हार्दिक चमनलाल वोरा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक गौतमचंद वेदमुथा एवं हेमराज सुराणा ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया। तेयुप सूरत की ओर से मंगल भावना पत्रक व मंगल कामना पत्र भेंट किया गया।

■ **सूरत।** अजमेर निवासी सूरत प्रवासी नोरतनमल मेहता के सुपुत्र अखिलेश मेहता का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक हिम्मत बंब एवं बजरंग बैद ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से अपने सामर्थ्य अनुसार सभी ने अच्छी संख्या में त्याग प्रत्याख्यान किये।

■ **रायपुर।** तेयुप रायपुर द्वारा अमृतलाल बरलोटा के सुपुत्र विकास बरलोटा के नूतन गृह का गृह प्रवेश पूजन जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक अनिल दुगड़ व सूर्यप्रकाश बैद ने संपूर्ण विधि मंत्रोच्चार द्वारा पूजन संपन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **राजाजीनगर।** राजाजीनगर। तेयुप राजाजीनगर द्वारा बेंगलुरु निवासी स्व. शांतिलाल बोल्या के सुपुत्र महावीर बोल्या एवं शिरहट्टी निवासी सुगिरप्पा बलिगर की सुपुत्री नीता बलिगर का विवाह पारिवारिक जनों की उपस्थिति में जैन संस्कार विधि संपन्न करवाया गया।

■ **साउथ हावड़ा।** रतनगढ़ निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी स्व. बाबूलाल धारेवाल के सुपुत्र मनोज कुमार धारेवाल का शुभ विवाह इलाहाबाद निवासी स्व. राज किशोर की सुपुत्री सुनीता सरोज से जैन संस्कार विधि से सम्पादित किया गया। संस्कारक संजय पारख़ एवं बिरेंद्र बोहरा ने मंगल मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम को संपादित कराया।

भूमि पूजन

बिलासपुर। बिलासपुर निवासी सुरेन्द्र मालू के नवीन भूमि पूजन बिलासपुर में जैन संस्कार विधि से कराने का अवसर तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर को प्राप्त हुआ। संस्कारक अनिल दुगड़ ने जैन संस्कार विधि की जानकारी प्रदान करते हुए विधि एवं मंत्रोच्चार द्वारा शुभ मुहूर्त्त में भूमि पूजन कार्य संपन्न करवाया।

दीक्षांत समारोह

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन

हनुमंतनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला के दीक्षांत समारोह का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में अभातेयुप उपाध्यक्ष - प्रथम पवन मांडोत की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र से किया गया। महाश्रमण सुर संगम द्वारा विजय गीत के संगान के बाद श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने कराया। तेयुप एचबीएसटी अध्यक्ष अंकुश बैद ने सभी का स्वागत किया। मुख्य अतिथि प्रकाशचंद लोढ़ा ने अभातेयुप के इस आयाम की प्रशंसा की और कहा कि ऐसे आयोजन समाज में नई प्रतिभाओं को आगे आने का अवसर प्रदान करते हैं।

सीपीएस राष्ट्रीय प्रभारी व प्रशिक्षक दिनेश मरोठी, राष्ट्रीय प्रशिक्षक विनीत सिंघवी, आयाम सलाहकार सतीश पोरवाड़, बैंगलोर संभाग प्रमुख अमित दक, सभा अध्यक्ष तेजमल सिंघवी ने अपने विचार व्यक्त किए। सीपीएस के 21 सहभागियों ने अपनी प्रस्तुति दी। तत्पश्चात् परिषद् द्वारा उन्हें प्रमाणपत्र दिए गए एवं 6 श्रेष्ठ सहभागियों को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। पधारे हुए अतिथियों का परिषद् की ओर से सम्मान किया गया। इस अवसर पर अभातेयुप साथी, जेटीएन प्रतिनिधि, राष्ट्रीय प्रशिक्षक पदम संचेती, ज़ोनल प्रशिक्षक, पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य गण, महिला मंडल, एवं बेंगलुरु की अन्य परिषदों के पदाधिकारी उपस्थित थे। संभागियों के पारिवारिक सदस्य एवं श्रावक समाज भी उनके उत्साहवर्धन हेतु उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक ललित बाफना, मोहित भण्डारी, दीपक बोल्या एवं पदाधिकारियों का श्रम मुखर रहा।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 15 वें महाप्रयाण दिवस पर विभिन्न आयोजन

लाडनूं

मुनि रणजीतकुमार जी के नमस्कार महामंत्र के साथ आचार्यश्री महाप्रज्ञ के 15वें महाप्रयाण दिवस कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति प्रदान की। डॉ. माणक कोठारी, तेरापंथ महिला मंडल लाडनूं की मंत्री राज कोचर, पार्षद रेणु कोचर, रणजीत चौरड़िया, अणुव्रत समिति लाडनूं के संरक्षक शांतिलाल बैद, संगठन मंत्री नवीन नाहटा ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। मुनि तन्मयकुमार जी, मुनि कौशलकुमार जी ने अपने भावों से आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। मुनि रणजीत कुमार जी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्य श्री महाप्रज्ञ के प्रति अपनी श्रद्धा प्रणति व्यक्त की। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथ महिला मंडल की कार्यसमिति सदस्य सुनीता बैद ने किया।

बेंगलुरु

लोटस अपार्टमेंट बसवनगुड़ी में साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 15 वें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में 'जिनपति सरूपो गुरुवरः' थीम पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।। नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः' के जाप से वातावरण महाप्रज्ञ मय बन गया। साध्वी उदितयशा जी ने अपने वक्तव्य में महाप्रज्ञ को राजपथ पर चलने वाले व्यक्तित्व बताते हुए उनके अर्श से महाप्रज्ञ बनने की यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होनें कहा कि महाराज ने बचपन में उनके सारल्य भाव को देखकर कहा था कि यदि पांचवा आरा न होता तो यह नत्थू इसी भव में मोक्ष चला जाता। साध्वीश्री ने आचार्य महाप्रज्ञ की सन्निधि में बीते पलों को साझा करते हुए श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। साध्वी संगीतप्रभा जी ने महाप्रज्ञ अष्टकम् को एक चमत्कारिक लघुकाव्य बताते हुए उसे कण्ठस्थ करने की प्रेरणा दी। साध्वी संगीतप्रभा जी एवं साध्वी भव्ययशा जी ने 'श्री महाप्रज्ञ भगवान कठै' गीत के माध्यम से श्रोताओं को महाप्रज्ञ से साक्षात्कार कराकर भावविभोर कर दिया। साध्वी भव्ययशा जी ने प्रेक्षाध्यान और महाप्रज्ञ को अभिन्न बताते हुए परिषद को ध्यान के छोटे-छोटे प्रयोग कराते हुए कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। महिला मण्डल की बहनों ने गीत की सुन्दर प्रस्तुति दी। महाप्रज्ञ अष्टकम पर महिला मण्डल, किशोर मण्डल एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रस्तुति दी। इस अवसर पर महासभा से प्रकाश चंद लोढ़ा, संजय बांठिया, सभा संगठन मंत्री धर्मेश कोठारी, तेयुप अध्यक्ष रजत बैद, तेममं अध्यक्ष रिजु डुंगरवाल एवं विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारीगण व श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

सुजानगढ़

तेरापंथ सभा भवन में 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का 15वां महाप्रयाण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र से हुआ। मंगलाचरण महाप्रज्ञ अष्टकम् से राजकुमारी भुतोड़िया ने किया। साध्वी पल्लवप्रभा जी एवं साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने कविता के माध्यम से, साध्वी मनीषाश्री जी एवं साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने भावपूर्ण शब्दों से एवं साध्वी संघप्रभा जी ने भावों की अभिव्यक्ति दी। 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के गुणों का उल्लेख करते हुए उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। गुरुदेव की सेवा में साध्वीश्री के अनुभव श्रावकों के लिए आह्लादकारी थे। महिला मंडल ने गीतिका के माध्यम से आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। केसरीसिंह मालू, मोहनलाल सुराणा, शोभा देवी सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किये। प्रदीप बैद ने गीतिका के माध्यम से श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मुकुलयशा जी ने किया।

मलाड़

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 15वें महाप्रयाण दिवस का कार्यक्रम तेरापंथ भवन मलाड़ में साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी व डॉ० साध्वी पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्रोच्चार व 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः' के जप से किया गया। रेशमा एवं वंदना जैन ने मंगलाचरण किया। तेयुप अध्यक्ष पेलेस मेहता, सभा अध्यक्ष इन्द्र चन्द जैन, मंत्री हस्ति भंडारी, तोलाराम जैन, तेयुप मंत्री विनोद सोलंकी, महिला मंडल मंत्री मीना बाफणा, मांगीलाल लोढ़ा, युक्ति जैन, ध्यानी जैन, प्रेमलता जैन व महिला मंडल ने गीत के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वी जागृतप्रभा जी ने कविता, साध्वी सुधाकुमारी जी ने गीत, साध्वी भावनाश्री जी ने वक्तव्य के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी संचितयशाजी, साध्वी दीप्तियशा जी एवं साध्वी रक्षितयशा जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के व्यक्तित्व व कर्तृत्व का रोचक विवरण प्रस्तुत किया। डॉ० साध्वी पीयूषप्रभा जी ने कहा- आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी उच्च कोटि के चिंतक और मनीषी ही नहीं, वे श्रेष्ठ साहित्यकार और कवि भी थे। उनके साहित्य में समसामयिक समस्याओं का समाधान मिलता है। आपने कहा - उनका काव्य साहित्य आकर्षक है। महावीर और मेघ का संवाद जीवन और दर्शन की कई गुत्थियों को सुलझाने वाला है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को महाप्रज्ञ साहित्य पढ़ना चाहिए। साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी ने कहा- आचार्य महाप्रज्ञ जी मणिधारी मां बालू के पुत्र थे। प्रारम्भ में वे अज्ञ थे। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ने उन्हें अज्ञ से महाप्रज्ञ बनाने में पुरुषार्थ किया। अनेक रोचक संस्मरणों का श्रवण कराते हुए कहा– आचार्य महाप्रज्ञजी समर्पण व संकल्प शक्ति से महायोगी, महान दार्शनिक, विशिष्ट संत व तेरापंथ धर्म संघ के महान तेजस्वी आचार्य बने।

हिसार

तेरापंथ भवन, मॉडल टाउन, हिसार में प्रज्ञापुरूष आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का 15वां महाप्रयाण दिवस 'शासनश्री' साध्वी यशोधराजी व 'शासनश्री' साध्वी प्रशमरति जी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम में उपसेवा केंद्र व्यवस्थापिका 'शासनश्री' साध्वी सरोजकुमारी जी की सहवर्ती साध्वी प्रभावनाश्री जी व साध्वी चिरागप्रभा जी भी पधारे। कार्यक्रम का शुभारंभ 'शासनश्री' साध्वी यशोधरा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण द्वारा अपने भाव प्रकट किए। साध्वी वृन्द ने गीतिका द्वारा अपने भाव व्यक्त किये। साध्वी प्रभावनाश्री जी, साध्वी कारुण्यप्रभा जी, साध्वी सुश्रुतप्रभा जी, साध्वी चिरागप्रभा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किये। साध्वी ऋजुयशाजी, साध्वी शान्तिप्रभाजी ने मधुर स्वर लहरों के साथ अपनी श्रद्धांजलि दी। 'शासनश्री' साध्वी यशोधरा जी ने अपने उद्बोधन में कहा आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने बचपन में दो संकल्प स्वीकार किये। पहला कि मैं ऐसा कोई काम नहीं करूँगा जिससे मेरे शिक्षा गुरु नाराज हों। दूसरा मैं किसी का अनिष्ट चिन्तन नहीं करूंगा। ये संकल्प हमारे जीवन में भी आने चाहिए। साध्वी श्री ने आगे कहा - आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की सन्निधि में 15 अक्टूबर 2003 को तत्कालीन राष्ट्रपति ए.पी.जे अब्दुल कलाम ने अपना जन्मदिन सूरत में मनाया और बिना प्रोटोकॉल के ही जब कई बार आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के दर्शन करने आए तो पत्रकारों ने पूछा- यहां आपको क्या मिलता है? उन्होंने कहा 'पीस ऑफ माइंड'। इसलिए इनके पास बार बार आता हूं। तेरापंथी सभा के मंत्री गौरव जैन ने इस अवसर पर अपनी भावांजलि अर्पित की। इस कार्यक्रम का संचालन साध्वी नीतिप्रभा जी ने किया।

बीदासर

समाधि केंद्र बीदासर में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के 15वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी साधनाश्री जी ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अपने पुरुषार्थ, समर्पण और विनम्रता से जीवन में अनेक उपलब्धियां हासिल की। 'शासनश्री' साध्वी अमितप्रभा जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी एक महान गुरु के महान शिष्य थे। अद्भुत विनम्रता और समर्पण से उन्होंने गुरु के दिल को जीता। 'शासनश्री' साध्वी कुलप्रभा जी ने अपनी स्वरचित कविता 'योगीराज तुम स्वर्ग सिधाए' की प्रस्तुति दी। साध्वी जयंतयशा जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी की अज्ञ से विज्ञ, विज्ञ से विशेषज्ञ, विशेषज्ञ से प्रज्ञ, और प्रज्ञ से महाप्रज्ञ की यात्रा का विस्तृत वर्णन दिया। केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशा जी ने आचार्य महाप्रज्ञजी से संबंधित अपने जीवन के दो महत्वपूर्ण प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी मंत्र दाता, समाधान प्रदाता थे। उनका अद्वैत केवल आचार्य तुलसी से ही नहीं था बल्कि आचार्यश्री महाश्रमण जी में भी आचार्य महाप्रज्ञ जी को देखा जा सकता है। इस अवसर पर साध्वीवृंद ने साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी द्वारा रचित गीत का संगान किया। मंगलाचरण साध्वी ऋजुप्रभा जी ने किया। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत की सुंदर प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा के कोषाध्यक्ष विमल जैन, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजू देवी बोथरा, अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष महावीर बैद ने भी अपने विचारों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी खुशीप्रभा जी ने किया।

सरदारशहर

आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के जीवन ग्रन्थ को जब हम पढ़ते हैं तो हमें लगता है कि वे सब कुछ होते हुए भी एक पहुंचे हुए योगी थे। ज्ञान योग, भक्ति योग और कर्म योग का उनके जीवन में अद्भुत संगम था। सौभाग्य से दीक्षा लेते ही परमपूज्य कालूगणी ने उनको मुनि तुलसी के संरक्षण में रख दिया। मुनि तुलसी ने उनके जीवन निर्माण में अनुशासन और वात्सल्य दोनों का प्रयोग किया। उसी का परिणाम था कि कुछ ही समय में महाप्रज्ञ ने तत्कालीन विद्यार्थियों में अपना पहला स्थान बना लिया। उपरोक्त विचार 'शासनश्री' मुनि विजयकुमार जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के महाप्रयाण दिवस कार्यक्रम में व्यक्त किये।

मुनिश्री ने आगे कहा– आचारांग का भाष्य लिखकर महाप्रज्ञ ने भाष्यकारों की श्रेणी में अपने आप को प्रतिष्ठित कर लिया। ज्ञान का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं रहा जो महाप्रज्ञ से अज्ञात रहा हो। महाप्रज्ञ का भक्ति योग भी अनुपम था। गुरुदेव तुलसी ने उनको आचार्य घोषित कर दिया तो भी वे एक सामान्य साधु की तरह उनको वंदन करते थे। वे हर क्षेत्र में शिखर तक पहुँच चुके थे फिर भी उन्हें इसका तनिक भी अभिमान नहीं था। कर्म योग की दृष्टि से देखें तो उनके जीवन में पुरुषार्थ की प्रधानता थी। समय का वे बड़ा सदुपयोग करते थे। उनकी दिनचर्या बहुत व्यवस्थित थी। उनके अवदानों की लम्बी श्रृंखला है। उसकी चर्चा सीमित शब्दों में करना संभव नहीं है। उस महापुरुष ने सरदारशहर की धरती पर आज ही के दिन अपनी स्थूल देह का उत्सर्ग कर दिया किन्तु उनका यशः शरीर सदा जीवित रहेगा। मुनिश्री ने आचार्य महाप्रज्ञ की अभ्यर्थना में गीत का संगान किया और प्रेरणा दी कि हर व्यक्ति कुछ समय के लिए ध्यान लगाये व 'ओम् श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः' मंत्र का जप करें। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, महामंत्री विनोद बैद, बाबूलाल बोथरा, सिद्धार्थ चिण्डालिया, दीपक पींचा, संजय बोथरा, महेन्द्र नाहटा, स्थानीय विधायक अनिल शर्मा, समीर वकीलवाला, प्रकाश डाकलिया, पारस बुच्चा, सपना लूणिया आदि ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की अभ्यर्थना में अपनी प्रस्तुति दी। स्थानीय ज्ञानशाला के बच्चों ने 'महाप्रज्ञ का अवदान-प्रेक्षाध्यान' विषय पर रोचक नाटक की प्रस्तुति दी। रात्रि में आयोजित धम्म जागरण में पिंटू स्वामी, डाकलिया बंधु, अभिलाषा बांठिया, आर. के. राजू सुराणा आदि ने अपने गीतों से प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

इंसान ने अपने मस्तिष्क रूपी सुपर कंप्यूटर को रख दिया गिरवी

पूर्वांचल, कोलकाता।

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में स्मृति विकास एवं चंचलता निवारण हेतु 'विलक्षण कार्यक्रम एकाग्रता का - अवधान विद्या' एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रणीत प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों का आयोजन द डिविनिटि पैवेलियन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया गया।

मुनि जिनेश कुमार जी ने धर्मसभा के समक्ष स्मृति विद्या का विलक्षण प्रयोग-अवधान प्रस्तुत करते हुए 24 अंकों की लम्बी संख्या, संस्कृत श्लोक, बहुभाषी शब्दों को स्मृति प्रकोष्ठ में अंकित कर अंत में ज्यों का त्यों सुनाया तो पूरा हॉल ओम् अर्हम की ध्वनि से गुंजायमान हो उठा। मुनिश्री ने बिना कागज, पेन का उपयोग किये सिर्फ मस्तिष्कय गणना से वार शोधन, सर्वतोभद्र यंत्र, घड़ी का समय बतलाना, माला प्रकाशन, घनमूल निष्कासन आदि सवालों के जवाब देकर श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। मुनिश्री ने अवधान विद्या पर प्रकाश डालते हुए कहा- अवधान विद्या चित्त की एकाग्रता और और स्मृति का स्फूर्त चमत्कार है। यह दीर्घकाल से प्रचलित है। अवधान का अर्थ है- ज्ञात-अज्ञात किसी भी परिचित बात या वस्तु को एकाग्र मन से अपने स्मृति कक्ष में धारण करना।

अवधान सिद्धि के पश्चात व्यक्ति को श्रवण मात्र से संस्कृत के श्लोकों एवं लम्बी संख्याओं को याद करने की क्षमता प्राप्त हो जाती है। कंप्यूटर, कैलकुलेटर, लैपटॉप के युग में इंसान ने अपने मस्तिष्क रूपी सुपर कंप्यूटर को उनके हाथों गिरवी रख दिया है जिसके कारण भूलने की समस्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है।

एकाग्रता एवं स्मृति के विकास के लिए आहार, इन्द्रिय, कषाय, विचार एवं वाणी संयम के साथ व्यवस्थित दिनचर्या का पालन करना जरूरी है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों में महाप्राण ध्वनि, दीर्घश्वास प्रेक्षा, ज्ञान केन्द्र पर पीले रंग का ध्यान, शशांक आसन आदि के प्रयोग एकाग्रता के विकास में बहुत उपयोगी है।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता प्रमोद शाह ने 'क्या संभव है एकाग्रता से सफलता' विषय पर विचार प्रकट करते हुए कहा - ज्ञान का सार है- एकाग्रता। एकाग्रता धैर्य, त्याग, योग और संयम से प्राप्त होती है। प्रेक्षा साधक रणजीत दुगड़ ने एकाग्रता के विकास हेतु प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराते हुए कहा - किसी भी साधारण और असाधारण तथा किसी भी असफल और सफल व्यक्ति में अंतर है तो वह एकाग्रता का है। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष हनुमानमल दुगड़ ने दिया।

आभार ज्ञापन मंत्री बालचंद दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री परमानंद ने किया। कार्यक्रम में बृहत्तर कोलकाता के श्रद्धालुगण अच्छी संख्या में उपस्थित रहे।

करियर काउंसिल सेमिनार का आयोजन

गोरेगांव, मुंबई।

टीपीएफ मुंबई वेस्टर्न शाखा द्वारा विवेक स्कूल एवं जूनियर कॉलेज के प्रांगण में करियर काउंसलिंग सेमिनार का आयोजन किया गया।

सत्र का उद्देश्य छात्रों को उपलब्ध विभिन्न करियर विकल्पों के बारे में बुनियादी जानकारी प्रदान करना था, ताकि उन्हें अपने करियर में सही निर्णय लेने में मदद मिल सके। सत्र की शुरुआत नवकार मंत्र के उच्चारण के साथ हुई। प्रिंसिपल शीजा मेनन ने सभी वक्ताओं का स्वागत किया और उल्लेख किया कि यह सत्र बहुत उपयुक्त है क्योंकि वहां के अधिकांश छात्र साधारण पृष्ठभूमि से आते हैं और ऐसे सत्रों तक बहुत सीमित पहुंच रखते हैं।

कार्यक्रम में 210 छात्रों की उपस्थिति रही। टीपीएफ सदस्य निमेश बंब ने विज्ञान (साइंस) स्ट्रीम के तहत विभिन्न विकल्पों के बारे में बताया।

डॉ. माधवी पेठे, पूर्व. एम. एल. दहानुकर कॉलेज के प्रिंसिपल ने छात्रों को जीवन में वाणिज्य (कॉमर्स) के महत्व को स्पष्ट रूप से समझाया। अंत में प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया गया। अध्यक्ष प्रशांत परमार ने आभार ज्ञापन किया। सत्र का संचालन कुणाल चोरड़िया ने किया। मंत्री कमल धारेवा का विशेष सहयोग रहा।

आध्यात्मिक विकास के लिए स्वस्थ शरीर है जरूरी

शाहीबाग।

तेरापंथ सेवा समाज एवं विजय शैल्बी अस्पताल के द्वारा तेरापंथ भवन शाहीबाग में मुनि मुनिसुव्रतकुमार जी के मंगल पाठ से प्रारंभ हुए कार्यक्रम में घुटनों व जोड़ों का दर्द, पेट की समस्याओं, एक्स-रे, बीपी व शुगर के लिए जांच शिविर का आयोजन किया गया। डॉ अभिषेक मेहता, डॉ पार्थ भावसार, डॉ सचिन धुगे, डॉ हेमंत राठौड़ आदि टीम ने निःशुल्क सेवा प्रदान कर लगभग 200 भाई-बहनों की जांच की। 'शासनश्री' साध्वी सरस्वती जी के सानिध्य में प्रवचन के पश्चात आयोजित कार्यक्रम में साध्वी संवेगप्रभा जी ने आध्यात्मिक विकास के लिए स्वस्थ शरीर को बहुत जरूरी बताया। स्वागत भाषण तेरापंथ सेवा समाज के अध्यक्ष नानालाल कोठारी ने दिया। चिकित्सकों की टीम का सम्मान किया गया।

आभार ज्ञापन मंत्री दिनेश बालर ने एवं कुशल संयोजन ट्रस्टी जवेरीलाल संकलेचा ने किया। कार्यक्रम में विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

आचार्यश्री महाश्रमण

दीक्षा कल्याण महोत्सव : पूज्यचरणों में अर्पित करें आध्यात्मिक उपहार

युगप्रधान, महातपस्वी, परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी एक सिद्ध योगी और जनकल्याणकारी महापुरुष हैं। स्व परकल्याण के लिए समर्पित ऐसे परम पवित्र महान गुरुवर के दीक्षा का पचासवां वर्ष 'आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव' के रूप में मनाया जा रहा है। आगामी 22 मई 2024 को आचार्यश्री महाश्रमणजी के दीक्षा के पचास वर्षों की संपन्नता के साथ ही यह वर्ष भी सुसंपन्न होगा। यह भी शुभ संयोग है कि 17 मई को परम पूज्य आचार्यप्रवर का जन्म दिवस तथा 18 मई को आचार्य पदारोहण दिवस भी है। इस दृष्टि से समापन समारोह छह दिवसीय अर्थात 17 मई से 22 मई तक रखा गया है। हम सभी ऐसे आध्यात्मिक महापुरुष व महान उपकारी गुरुवर को अभिवंदना स्वरूप आध्यात्मिक उपहार अर्पित करें, इस दृष्टि से छह दिनों के छह संकल्प निर्धारित किए गए हैं।

कोई भी व्यक्ति अपनी सुविधा व इच्छा के अनुसार सभी संकल्प अथवा इनमें से एक अथवा एकाधिक संकल्प स्वीकार कर सकता है। चारित्रात्माएं और समणीवृन्द भी इस हेतु श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित करें, ऐसी अपेक्षा है। निर्धारित संकल्प इस प्रकार हैं-

1. मैं 17 मई 2024 को गुस्सा व अपशब्द का प्रयोग नहीं करूंगा। यदि इसमें प्रमाद हुआ तो संबंधित व्यक्ति से एक घंटे के भीतर क्षमा याचना करूंगा तथा अगले दिन नमक का त्याग रखूंगा/रखूंगी।
2. मैं 18 मई 2024 को निरंतर तीन घंटे पंखा, ए.सी. व कूलर का उपयोग नहीं करूंगा/करूंगी।
3. मैं 19 मई 2024 को प्रातः 09:00 से 10:00 बजे के बीच सामायिक करूंगा/करूंगी।
4. मैं 20 मई 2024 को सायं 07:00 से 08:00 बजे तक मौन का प्रयोग करूंगा करूंगी।
5. मैं 21 मई 2024 को चीनी व चीनी से बनी चीजों का सेवन नहीं करूंगा/करूंगी।
6. मैं 22 मई 2024 के सूर्यास्त से 23 मई 2024 के सूर्योदय तक पानी व अति आवश्यक दवाई के सिवाय कुछ भी ग्रहण नहीं करूंगा/करूंगी।

संकल्प पत्र भरने के लिए क्यू.आर. कोड स्कैन करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

साउथ हावड़ा

महावीर जयंती के अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में 'मेरे प्रभु महावीर' का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद साउथ हावड़ा द्वारा सरत सदन ऑडिटोरियम में किया गया। इस अवसर पर उद्गार व्यक्त करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा भगवान महावीर भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल नक्षत्र व ज्योतिर्धर पुरुष थे। उनकी जीवन गाथा श्रेष्ठ व अनुत्तर थी।

उन्होंने तीस वर्ष की उम्र में संन्यास लिया और तीर्थ की स्थापना कर वे तीर्थंकर बने। उन्होंने अहिंसा, अनेकांत व अपरिग्रह का सिद्धान्त देकर मानव जाति पर बहुत उपकार किया। उनके सिद्धान्तों को विश्व आत्मसात करले तो अनेक वैश्विक समस्याओं का समाधान हो सकता है। गायक ऋषि दुगड ने सुमधुर भजनों की सरिता प्रवाहित की। उन्होंने भगवान महावीर व भिक्षु स्वामी की भक्ति में भजनों की प्रस्तुति से उपस्थित जनता को भाव विभोर कर दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ वृहत्तर कोलकाता की तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष एवं मंत्री द्वारा विजय गीत के संगान से हुआ। मंगलाचरण तेयुप एवं किशोर मंडल के सदस्यों ने किया। स्वागत भाषण तेयुप साउथ हावड़ा अध्यक्ष गगनदीप बैद ने दिया। महाश्रमण भजन मंडली, तेयुप लिलुआ, तेयुप उत्तर हावड़ा, तेयुप उत्तर कोलकाता द्वारा गीत प्रस्तुत किये गए। आभार ज्ञापन तेयुप सहमंत्री राहुल दुगड़ एवं संचालन तेयुप मंत्री अमित बेगवानी ने किया।

विरार, मुंबई

तेरापंथ भवन विरार में साध्वी पुण्ययशा जी आदि ठाणा 4 के सानिध्य में भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ साध्वी वर्धमानयशाजी, साध्वी बोधिप्रभाजी के मंगलाचरण से हुआ।

साध्वी पुण्ययशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा- भगवान महावीर आत्म साक्षात्कार के महान प्रवर्तक थे, अनुत्तर ध्यान के आराधक थे। उन्होंने जातिवाद को अतात्विक बताते हुए कहा कि मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से श्रेष्ठ होता है। भगवान महावीर द्वारा प्रवर्तित अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांत के सिद्धांत वर्तमान की अनेक समस्याओं के समाधान हेतु प्रासंगिक और उपयोगी है।

साध्वी विनीतयशाजी ने कहा भगवान महावीर ने मैत्री का संदेश दिया, अनेकांत दर्शन से दुनिया को एक नई दृष्टि दी। साधना के विभिन्न प्रयोगों के द्वारा केवल ज्ञान को प्राप्त कर जैन धर्म के 24 वे तीर्थंकर बने। कार्यक्रम में आमदार हितेंद्र ठाकुर, युवा आमदार क्षितिज ठाकुर, अजीव पाटिल, नगरसेवक नयन जैन, किरण ठाकुर ने अपने विचार व्यक्त किये।

राजसमन्द

भिक्षु बोधि स्थल के तत्वावधान में भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया गया। भंवरिया परिसर से भव्य शोभा यात्रा प्रारम्भ हुई जो अनेक मार्गों से होते हुए भिक्षु निलयम पहुंची। शोभा यात्रा में भगवान महावीर के जीवन व उनके उपदेशों, संदेशों से संबंधित सुन्दर व आकर्षक झांकिया प्रदर्शित की गयी थी।

शोभा यात्रा संपन्न होने के पश्चात् भिक्षु निलयम में धर्मसभा आयोजित की गयी। धर्मसभा में मंगल पाथेय प्रदान करते हुए साध्वी प्रसन्नयशा जी ने भगवान महावीर के उपदेशों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भगवान महावीर ने किसी वस्तु के प्रति आसक्ति को परिग्रह कहा। अर्जन हो परन्तु उसके प्रति मोह या आसक्ति नहीं होनी चाहिए। अर्जन पूर्ण ईमानदारी व नैतिकता से हो। अनेकान्त से वर्तमान की बहुत सी समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है।

साध्वी क्षितिप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। मुख्य वक्ता युवा गौरव पदम चंद पटावरी ने विस्तार से भगवान महावीर के जीवन व उनकी साधना पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर ने नारी सशक्तिकरण का हमेशा समर्थन किया, दास प्रथा और जातिवाद का विरोध किया।

इस अवसर पर गणपतलाल धर्मावत, हर्षलाल नवलखा, सुधा कोठारी, दर्शिता सहलोत ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

महिला मण्डल की बहनों ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत के माध्यम से भगवान महावीर के उपदेशों को बहुत ही सुन्दर व प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन अनिल बडोला ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन महेश लोढ़ा ने किया।

कांदिवली, मुंबई

प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रेक्षाध्यान योग साधना केंद्र अशोक नगर कांदिवली मुंबई द्वारा महावीर जयंती पर कायोत्सर्ग के विशेष सत्र के आयोजन करने के बाद पुनः जनता की मांग के बाद कायोत्सर्ग, शरीरप्रेक्षा की विशेष जानकारी के साथ दूसरे सेशन का आयोजन किया गया। त्रिपदी वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षिका विमलादेवी दुगड़ ने मंगल भावना करवायी एवं इसकी विस्तृत जानकारी सभी को दी। सभी ने मिलकर सामूहिक प्रेक्षागीत का संगान किया। उसके बाद वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ ने शरीर विज्ञान 'आएं जाने शरीर को' विषय पर अपना वक्तव्य दिया। एवं कायोत्सर्ग व शरीर प्रेक्षा का प्रयोग करवाया।

तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन

सुजानगढ़

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा अभातेममं द्वारा निर्देशित वर्ष भर चलने वाले कैंसर जागरूकता अभियान का तीसरा चरण ओसवाल विद्यालय में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभाजी की सहवर्ती साध्वी मनीषाश्री जी एवं साध्वी मुकुलयशा जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। स्वागत भाषण एवं विषय प्रस्तुति महिला मंडल अध्यक्षा राजकुमारी भुतोड़िया ने किया। साध्वी मनीषाश्री जी ने जैन धर्म के सिद्धांतों को बताते हुए कहा कि हमें शुद्ध आहार, शुद्ध रहन-सहन और शुद्ध संगत रखना चाहिए ताकि हमारे आसपास बीमारी आ ही ना पाए। मुख्य वक्ता डॉ. खुशबू सोनी ने कैंसर के लक्षण, कारण एवं बचाव के उपाय पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने नशे के दुष्परिणामों को बताते हुए नशे से बचने की प्रेरणा दी। स्कूल के प्रिंसिपल ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें कोई भी आदत ऐसी पालनी ही नहीं चाहिए जो हमें तकलीफ दे।

नशा आदमी को कभी आगे बढ़ने नहीं देता, धीरे-धीरे गर्त में गिरा देता है। कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों की सराहनीय उपस्थिति के साथ में 100 बच्चे और 15 शिक्षक - शिक्षिकाओं ने भी इस सेमिनार में भाग लिया। कुशल संचालन सुमन चौरड़िया ने किया।

जसोल

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा 'कैंसर अवेयरनेस प्रोग्राम' का आयोजन किया गया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। प्रेरणा गीत से मंगलाचरण हुआ।

अध्यक्षा कंचन ढ़ेलडिया ने मुख्य वक्ता डॉ. विक्रमसिंह राजपुरोहित, तेरापंथ सभा जसोल के मंत्री कांतिलाल ढेलडिया एवं पूरे मंडल का स्वागत किया। उपाध्यक्ष जयश्री सालेचा, पूर्व मंत्री ममता मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. विक्रमसिंह राजपुरोहित ने कैंसर के प्रकार, लक्षण एवं बचाव के उपायों की जानकारी दी।

सात्विक भोजन, व्यायाम, योग एवं प्रेक्षाध्यान से कैंसर से बचा जा सकता है। मंडल की तीन बहनों ने 'मुश्किल है पर नामुमकिन नहीं' विषय के अंतर्गत कैंसर से अपनी जीत की कहानी सुनाई। तेरापंथ सभा मंत्री कांतिलाल ढेलडिया ने सबका आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का सफल संचालन अंजू वडेरा ने किया।

हैदराबाद

आचार्य महाश्रमण दीक्षा कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष में तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद द्वारा 'आराधना आराध्य की' के अंतर्गत 10,021 माला फेरी गई। हैदराबाद के कई तेरापंथी परिवार इस अभिवंदना से जुड़े।

इरोड

तेरापंथ महिला मंडल इरोड द्वारा पौध को सींचें कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। मोटीवेशनल स्पीकर पिंकी बंसल ने आज के युग में परीक्षा को लेकर बच्चों तथा अभिभावकों में होने वाले तनाव के कारणों पर चर्चा की। ऐसे वक्त में बच्चों को रिलेक्स और स्ट्रेस फ्री रहने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें बताईं। पिंकी भंसाली ने कहा कि माता-पिता एक माली के समान होते हैं, जो अपने बच्चों में संस्कारों का सिंचन करते हैं। अच्छे संस्कारों से सुसज्जित बच्चा जब आगे बढ़ता है तो निःसंदेह परिवार, समाज और राष्ट्र को सशक्त बनाता है।

पिंकी भंसाली की अध्यक्षता में सफ़ल आयोजन हुआ। मंडल की मंत्री पूनम दुगड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रज्ञा सुराणा द्वारा किया गया।

कषाय मुक्ति से आत्म उत्थान की दिशा में बढ़ें आगे : आचार्यश्री महाश्रमण

बागपिंपल गांव।
30 अप्रैल, 2024

क्षमा धर्म के साधक आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आगमवाणी की अमृतवर्षा कराते हुए फरमाया कि हमारी आत्मा अनन्त काल से संसार में परिभ्रमण कर रही है। परिभ्रमण इसलिए कर रही है कि कर्म आत्मा के साथ जुड़े हुए हैं उन कर्मों के कारण आत्मा आगे से आगे, आगे से आगे अपना आयुष्य का बंधन करती रहती है, जन्म लेती रहती है। जन्म होता है, तो फिर मृत्यु तो होनी ही होती है।

इस जन्म और मरण को दुःख कहते हैं। पाप कर्म जितने भी लगते हैं वे सारे मोह से उत्पन्न होने वाले होते हैं। जन्म-मरण का कारण कर्म है। राग और द्वेष कर्म के बीज हैं। मन के साथ राग-द्वेष के भाव जुड़ते हैं तो मन का योग अशुभ हो जाता है। कहा गया है कि मोहकर्म अलग रहता है तो मन, वचन, काय की प्रवृत्तियां उज्जवल-शुभ रहती हैं और मोह कर्म का संयोग हो जाता है ये प्रवृत्तियां दूषित या मलिन हो जाती है।

हमारी साधना यह होनी चाहिए कि हम राग-द्वेष को प्रतनु करें। चाहे दिगम्बर बन जाओ या श्वेतांबर बन जाओ इतने मात्र से मुक्ति नहीं है। कषाय मुक्ति ही मुक्ति का आधार है। अनुकूलता से राग और प्रतिकूलता से द्वेष का भाव चलता रहता है, ये राग-द्वेष जाल है, इस जाल से हम अपनी आत्मा को निकाल दें। द्वेष तो पहले चला जाता है, पर राग फिर भी थोड़ा सा रह जाता है। वीतराग के द्वेष नहीं होता, वीत-द्वेष के राग रह सकता है।

अक्षय तृतीया भगवान ऋषभ के वर्षीतप की सम्पन्नता से जुड़ी है, इस उपलक्ष में आज भी कई लोग इस दिन अपने वर्षीतप की सम्पन्नता करते हैं।

भगवान ऋषभ ने गृहस्थ का जीवन भी जीया, बाद में साधु, केवली और तीर्थंकर भी बन गये। अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर हुए हैं उनके निर्वाण का 2550वां वर्ष चल रहा है।

काल की चक्की को तो रोका नहीं जा सकता पर समय का हम बढ़िया उपयोग करने का प्रयास करें। भगवान ऋषभ के साधु ऋजु जड़, भगवान महावीर के साधु वक्र जड़ एवं बीच के बाईस तीर्थंकरों के साधु ऋजु प्राज्ञ बताए गए हैं। आचार क्रम भी सबके समय में अलग-अलग हो सकता है।

भगवान ऋषभ से लेकर भगवान महावीर तक के तीर्थंकरों को एक बार भी नमस्कार करलें तो कल्याण हो सकता है। साधुत्व आना भी बड़ी बात है, वर्तमान में तो अष्टम् गुणस्थान भी प्राप्त नहीं हो सकता है, वर्तमान में साधु में छठा-सातवां गुणस्थान ही हो सकता है।

हमें वीतरागता की तरफ ले जानेवाला अध्यात्म का पथ प्राप्त है। जिन शासन के छत्र में भैक्षव शासन-श्वेताम्बर तेरापंथ परम्परा का साया हमें प्राप्त है। हम पंच परमेष्ठि को नमस्कार कर आत्म उत्थान की दिशा में आगे बढ़ें। पूज्य प्रवर के स्वागत में सरस्वती धाम की ओर से ऋषभराज गंगवाल ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अध्ययन, जप और दान में नहीं करें संतोष : आचार्यश्री महाश्रमण

दाभरूल।
3 मई, 2024

आदमी के भीतर इच्छा होती है। अनिच्छ कोटि के मनुष्य भी मिल सकते हैं, जिनके मन में लोभ के रूप में कोई इच्छा नहीं होती है। सारे वीतराग अनिच्छ होते हैं। कुछ लोग अल्पेच्छ होते हैं। श्रावक के बारह व्रतों में इच्छा परिमाण व्रत है, भोगोपभोग परिमाण व्रत भी है, जिसके द्वारा इच्छाओं का परिसीमन कर लिया जाता है। कई मनुष्य महेच्छ होते हैं तो कई उदारमना लोग भी होते हैं। हमारे मन में संतोष की प्रधानता आ जाए। ये उद्गार परम् पावन आचार्य श्री महाश्रमणजी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाए।

इच्छा बढ़े तो विराट रूप ले सकती है। सोने-चांदी के पर्वत दे दिये जाएं तो भी लोभी आदमी संतोष नहीं करता है। इसलिए शास्त्र में कहा गया है कि इच्छा आकाश के समान अनंत है। आकाश का कहीं आरम्भ-समापन नहीं है वैसे ही इच्छा भी आकाश के समान अनंत हो सकती है। इच्छा अच्छी भी हो सकती है तो इच्छा अस्वच्छ भी हो सकती है। आध्यात्मिक उन्नयन की इच्छा अच्छी हो सकती है। व्यक्ति संतोष करें पर अच्छी बातों में असन्तोष भी करें। स्वदार, भोजन, धन और परिग्रह में संतोष करें। तीन चीजों - अध्ययन, जप और दान देने में संतोष नहीं करना चाहिए। पूज्यवर ने प्रसंगवश प्रेरणा देते हुए फरमाया कि आगम तो कामधेनू है, उसका दोहन करते जाओ। जितना हो सके आगम का मंथन करते जाओ, उसमें संतोष मत करो।

आचार्यवर ने आगे फरमाया कि आग में कितना ही ईंधन डालो सब स्वाहा हो जाता है, वैसे ही लोभी को कितना भी धन मिल जाये, उसे और पाने की इच्छा रहती है। धन में स्थिरता नहीं रहती है। जुए में, शराब में, बाढ़ आने से, राजा के आदेश से, आग लगने से, चोरी से, सरकारी कर के रूप में आदि अनेक रूपों से धन जा सकता है। गृहस्थों के लिए धन जरूरी भी है पर थोड़े में संतोष रखें, नैतिकता रखें। गृहस्थ कुछ समय धर्माराधना में भी लगाये। इच्छाओं पर ब्रेक लगाने से व्यक्ति का जीवन धन्य हो सकता है।

चैतन्य की निर्मलता के लिए करें धर्म साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

महाकाला।
1 मई, 2024

धर्मोपदेशक आचार्य श्री महाश्रमणजी ने वीतराग वाणी की अमृतवर्षा कराते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में दो तत्त्व हैं- शरीर और आत्मा। आत्मा और शरीर इन दोनों का योग है, इसी का नाम जीवन है। जब शरीर और आत्मा का वियोग होता है, तो मृत्यु हो जाती है। जब शरीर और आत्मा हमेशा के लिए वियोग, आत्यन्तिक वियोग कर लेते हैं, आत्मा हमेशा के लिए अशरीर बन जाती है, वह मोक्ष होता है। जीवन चेतन और अचेतन का मिश्रण है। पूरी दुनिया में दो ही चीजें हैं- जीव और अजीव। यह सिद्धान्त रहा है कि शरीर और आत्मा अलग-अलग चीजें हैं, इनका अपना-अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। भले दोनों का मिश्रण हो पर सत्ता अलग-अलग है जैसे मिट्टी और सोना।

नास्तिक विचारधारा का सिद्धान्त है कि जो जीव है वही शरीर है। आस्तिक विचारधारा का सिद्धान्त अलग माना गया है- शरीर और जीव अलग-अलग हैं।

जब तक मोक्ष नहीं होता है, आत्मा एक जीवन के बाद दूसरे जीवन में चली जाती है, पुनर्जन्म को प्राप्त होती है। चैतन्य स्थायी है, शरीर अस्थायी है। शरीर एक पर्याय है पर्याय का विनाश होता है। आत्मा को कोई मार नहीं सकता, काट नहीं सकता। आत्मा स्थायी द्रव्य है, शरीर पर्याय है, इसलिए विनाशधर्मा है। हम चिन्तन करें कि मैं स्थायी के लिए क्या कर रहा हूं और अस्थायी के लिए क्या कर रहा हूं? आत्मा को भी खाना खिलाया जाये, स्नान कराया जाये। नमस्कार मंत्र की माला, सामायिक, स्वाध्याय, संत दर्शन आत्मा की खाद्य सामग्री हो सकती है। अगले जन्म में हमारा धन साथ में नहीं जाता, स्थूल तन भी साथ में नहीं जाता, परिवार, मित्र-स्वजन भी आगे साथ में चलने वाले नहीं होते हैं। आत्मा के साथ तेजस-कार्मण शरीर साथ में जाते हैं, और कर्म साथ में जाते हैं। हम आत्मा की साधना के लिए क्या कर रहे हैं, यह ध्यान दें। बढ़ती उम्र के साथ जीवन में परिवर्तन करना चाहिए, धर्म की साधना को और बढ़ाने का प्रयास करें। जीवन में सरल रहें। छल-कपट नहीं है, तो आत्मा अच्छी रह सकती है। हम आत्मा की निर्मलता, आत्मा के कल्याण का, आत्मा के उत्थान का प्रयास करें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सहना चाहिए, मौके पर कहना चाहिए और शांति से रहना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

शिवाजीनगर गढ़ी।
29 अप्रैल, 2024

अध्यात्म शक्ति सम्पन्न आचार्य श्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारे भीतर कषाय हैं, कषाय के रूप में मानो वृत्तियां हैं। हर जीव में कषाय हो यह जरूरी नहीं है। पच्चीस बोल के पंद्रहवें बोल में आठ आत्माएं बताई गई हैं। उनमें एक तो द्रव्य आत्मा है, जो हर प्राणी में और सिद्धों में सब में ही है। जीव है तो द्रव्य आत्मा होती ही है।

आठ आत्मा में एक आत्मा है- उपयोग आत्मा। उपयोग आत्मा भी हर जीव में होती है। अनन्तकाल से द्रव्य आत्मा और उपयोग आत्मा का साहचर्य है, आगे भी हर जीव में रहेगा। दर्शन आत्मा भी सिद्ध हो या संसारी, हर जीव में रहती है, ऐसा प्रतीत होता है। द्रव्य, उपयोग और दर्शन ये तीन आत्माएं हर जीव में उपलब्ध होती हैं, चाहे सिद्ध हो या संसारी।

कषाय आत्मा सब जीवों में नहीं होती। वीतराग, केवलज्ञानी और सिद्ध भगवान में कषाय आत्मा नहीं होती। दसवें गुण स्थान के बाद कषाय आत्मा नहीं होती है। योग आत्मा भी सबमें नहीं है। चौदहवां गुणस्थान अयोगी केवली गुणस्थान है, वहां योग आत्मा नहीं है।

ज्ञान आत्मा केवल सम्यक् दृष्टि जीवों में होती है, मिथ्या दृष्टि जीवों में नहीं। चारित्र आत्मा छठे गुणस्थान से लेकर चौदहवें गुणस्थान तक होती है। सिद्धों में और स्थावर जीवों आदि में चारित्र आत्मा नहीं होती।

वीर्य आत्मा सिद्धों में नहीं होती, संसारी जीवों में होती है। आठ आत्माओं में से तीन आत्माएं द्रव्य, दर्शन, उपयोग तो सब जीवों में पाई जाती हैं। अन्य पांच आत्माएं सब जीवों में नहीं होती। सिद्धों में आठ आत्माओं में से चार आत्माएं पाई जाती है, संसारी जीवों में कम से कम छः आत्माएं होती है।

आठ आत्माओं में कषाय आत्मा भी है। क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषाय हैं, जो कभी तो भीतर में पड़े रहते हैं, कभी उभर जाते हैं। सामान्य आदमी को गुस्सा तीव्र, मन्द या मध्य स्तर का आ सकता है। हम गुस्से से बचने का प्रयास करें।

क्रोध मनुष्य का शत्रु होता है, मोह कर्म के विपाक से आदमी तेज गुस्से में चला जाता है। तीव्र गुस्से में कोई शांत करने वाला मिल जाये तो गुस्सा शांत हो सकता है। गुस्सा हमारी दुर्बलता है, इससे आदमी स्वयं भी परेशान हो जाता है और दूसरों को भी परेशान करने वाला बन सकता है। जिस आदमी के पास क्षमा रूपी तलवार हाथ में है, तो दुर्जन व्यक्ति उसका क्या बिगाड़ पाएगा? ज्ञान होने पर भी मौन हो जाना और शक्ति होने पर भी क्षमा रखना महानता को दर्शाता है। बड़ों का बड़प्पन है कि वे भी सहन करें। कभी कहना चाहिए तो कभी सहना भी चाहिए, कड़ाई के साथ में नरमाई भी रखनी चाहिए।

आदमी को सहना चाहिए, मौके पर कहना चाहिए और शांति से रहना चाहिए। परिवार, व्यापार और समाज में भी शांति रखें। गुस्सा हमारा शत्रु है, हम इससे यथासंभव बचने का प्रयास करें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**